মনতজুসারসংগুহ।

ডাপ ইশ্পজ্জিম ও মেপ কোন্ব

নাহেৰুকুত

क्त्रमानी बाज् अवर

क्ननकी कन् ठाउठे ११७

সরিসং গ্রহ ক্রিয়া

কলিকাতা ফুনলন্দীকেল্লোশাইটির সভাস্থ

গ্রীরাধাবলভ দাস

कर्क्क

বলভাষায় 'শনুবা' দৈও হইছা

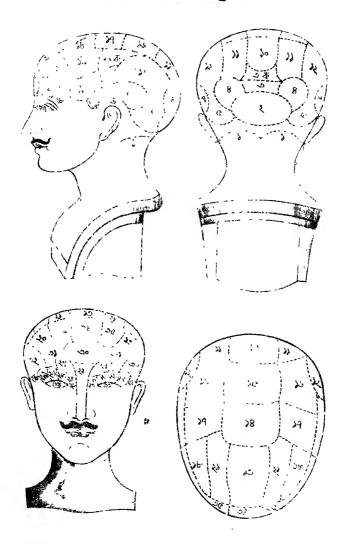
কলিকাডা

সংবাদ প্রতিজ্ঞোদয় বলে মুপ্রান্থিত হইক।

এই পুঞ্জক চুধানিক গোলোকচন্দ্র দাসসর বার্টীতে আথবা পুন্যজ্যেদ্য ব্যব্ধ তথ্ব করিলে পাইবেদ।

मन ३२०७ माल।

मन्बञ्च नमृत्राध भाव॥



সকল মন ইন্সিয়ের ব্যক্তি বৃদ্ধ ইন্সিয়ের বেশ স্থান মনতত্ব সম্পান হাতিতে বৃদ্ধ বারা চুয় হইয়াহে তাহার নির্মী

v	
क्रामिस्	"अम् । जानका श्रेष्ठि ।
। रेक्सरेनिया	१ के रिकेश कि, वा स्त्री
া ব্যক্তিপ্রবৃদ্ধি	All material
A I Producte Control	१५ का अमालि दित रह गई
७। वरायानका हा	২ । প্রিয়াসপ্রবৃদ্ধি।
ं की बहानानुगंबद्गव् ह	३) काम्यः अविषः।
8 रक्ष्मियं क ि	',' अवीदनिश्वा।
व। विश्वन्त्रभविष्	। ৮ এখন ভিত্ত
৩। নালকপ্রবৃত্তি 🖫	N. P. Pilo Hall
· क । बोल/श्रव्कि ।	২৩ । আকৃতিবৃত্তি।
१ । जाश्रमध्यक्ति	रेशां शृहिमावद्खि।
₩। जेशा क नहार्यक ी	रेका जात्रवर्तन
* 1: Francisco ()	केंद्र राज्य है।
	अन्। जानवृद्धिः।
া৷ চন্তাইলৈয়	केंद्रा अहत् छ ।
» । आश्रामतश्रव्हि।	रका दलनागृष्ट
३३ । 'आक्र याः धन्ष्यं ।	৩০। ঘটনার
১২। সভকভাপ্রবৃত্তি	৩১৷ কালৰ বৈশ্ব
>७ । क्या शर्वाख	A MALE
১৪1 ভাক প্রবৃদ্ধি	90 / TES B
,द । देशका ए रेडि दि	राष्ट्रिक्तमानशक्ता
b l Politalactunical	জন ি উপান্যাৰন্তি।
भा न्यानावर्गको ।	AND LEWIS .
P5:49	P. S. Mark Mills .

অশেষ খণ্ডুনিত প্রয়ুত বারু কেশবলাল মলিক মহাশয় মহোদয়েষু।

আমি এই যে মনতত্ত্বসারসংগ্রহ পুস্তক ইংরাজী नाना अंड हरेटड मध्यह कतिशाहि, वाशनिहे हेहात अथम উদেবানী, आश्रमात जनवत्र ह एके। उ मत्ना-र्याश बाता हेरा मुल्लान रहेनारह, जवर जालान षागांत এই शब् भक्षनन विषदा मान्याञ्चमात्त भाराया कतिए कार्षि करान नारे, कनकः क्वान সাপনকার উৎসাহে ও. আমু কুল্যে এই সাধার-भाष्ट्रिकारिकी सन्वय विमास वक्षणाया अञ्चलत्त्र । স্ত্রপাত হইল অতএব আমি নানন্দের সহিত এই অভিনৰ পুস্তক আপনীকৈ সমর্পণ করিয়া ্রভজতাভার হইতে মুক্ত হইলাম এবং প্রত্যাশা কৈরি এতাদৃশ বিষয়ে অবির্ত মনোযোগ সহকারে ্টিৎসাহ প্রদান করিতে আপনি কথনই বিরত ভ্ৰহীৰেন না কিমধিক মিতি।

> শ্রীরাধাবল্লভ দাস। চুনাগলি।

किनकाण। > टेह्न >२०७। কেছ বা অক প্রশ্ন দৈখিয়া বা শুনিয়া তংকণাং উত্তর করিতে পারে, এবং কেই বা তর্ক করিতে ও নানা প্রকার অলকারাদি দিয়া আপন কংগ স্থানা ভিত ক্ষিতে পারে, দিন্ত তিনি প্রয়া তির্মকাপ পাঠ অভ্যাস করিতে পারিকেন না, উ হার তক্ষ্ কুদ্র ছিল এবং পাঠশালার সে তেনাক উত্তম কপে পাঠ অভ্যাস করিতে পারিত ভানাপ্র সংলদাই তাঁহা হইতে মানা হইত, এ সকল উত্তম নালকের তফ্ষু বৃত্তি

अथरम किनि धमल दिए करान नाई, त एक क्रिक् दे हे है कि का भार मिला में मिला में कि का नां है कि दे हैं कि का नां है का न

अहे ज्ञान डेक इहेटलई ज्ञान जातन ताथिटल शाटत। এবজ্ঞকার চিত্র দেখিয়া আপন মনে স্থির করি-लन, यहानि टाः धिङ्क षाता चछत्र हेलिय अक লের স্থান জ্যানজে ১৯৮ চন্দ্র, তবে মনের অন্যান ওবেরও অবশ্বস্থ বাফ ডিব্ল আছে ও তদ্মারা मान अरुत मन्भाकि काम वाईए० भातित्वयः। তংগতি, বি জাজার বল সাহেল যে সকল মত্য হয় বেলে বিশেষ খাওঁ বিফ তান দেখিতেন कारातात्र वावहात् । श्रीहि महामध्यात्र श्रुक्तिक १४ थे १४ भे तम्र स्विद्यास अहेबान महास्य सिक्त क्षा पार वर्ष वर्ष वर्ष शतिद्वा शतिद्वा मिधात्र का वेदलन, বে মতা বাত্ত বাহল মন্তিকের পরিমাণীরূমা-रतरे अक अस्त । **असे अकारत करम करम ना**ना দেশীয় নাম ভাতীয় হানা প্রকার মহান্যের বাছ ব্যবহার ও ী**তিনীতি দশ**্ করিয়া **এবং ভদ্নসু-**সারে ভাষাদিগের মস্তিত্তের পরিমাণ ও বিশেষং . मिर्किया स्वत्व (मन्तितः य द्वान **१३८७ व्यः ७**० **উৎপন** इत हा हा विवेश कृतिस्थिन, **अवर अवस्थर** अल्फियाः (विषय अकात अल् तहना अ कतिया-€ वा

ভূমিকা ৷

बहे जान्छ्या विमा नाना समीतु छायाछ छन् ना**निত हरे**बाहरू, **मच्छाि अ्ष्टाकृमीय जन**गरनब खेशकाहार्र्य अहे **अह** वक्ष क्रिटम हैरेडाकी नाना ক্রোনল জী অর্থাৎ মনতর পুস্তক হইতে সারসংএই করিয়া গোড়ীয় সাধু ভাষায় শকুবারিত এইজন প্রার্থনা করি পাঠক মহাশয়েরা , খানুরাই ুর্বেক এই পুত্তক পাঠ করিবে আমার গুরুতর পবিশ্র-(मत स्ट्रिक्ट शृहक्षांत इकेटन । ऐशा शांक चित्रका কি উপকার হয় ভাঙা কৰনা বিভ, ভথাতি, এই পুস্তকের মধ্যেই ও শেষা গোডান্ডলত কভিপ্র शरक निश्चिमाम। यमि धरे श्रुष्ठदकत भरवा कोन अश**्टम दिना अस इ**हेशा थाटन करने गाठेक अही-শরেরা শোধন করিয়া গ্রহণ করিলে টিরবাপিছ श्रेव।

এই মহোপকারিণী বিদ্যা চারি তথার হুইন এতদেশস্থ অতাপৌরাজির জ্ঞাত ছিল, কিন্ত ইং- রাকী ১৮৪৫ নালের ৭ জুন তারিখে কলিপয় বিভাগ সভা ব্যক্তির দারা কলিকাতা, গ্রোনলজী-কেল সোমাইটি জ পিত ২ওয়াপর্যন্ত এতদেশে বিভাগ কথ প্রকৃতিত হুইতে আরক্ত হুইয়াছে।

প্র র ৫০ বংশলের কিঞ্জিং অধিক হউল ইউরোপের অন্তলে তি হবারনা দেশ স্থ ডাক্ষর গল্ সাহেব
নই নাল প্রথম প্রকাশ সন্মেন, তৎপরে জালার
কিন ডালার ইশ্পর্জিম্ সালার উল্লেখ্য
প্রথম প্রতার ও নাম করিয়াছেন, লয় তত্ত্বর
শীঘ্রল কাম্ব লাহেব ও অন্যান্য জানী মহাশালার পরি ভারত পরি বিদ্যান্ত উত্তর
প্রতা ভারত পরি প্রথম করিয়া ঐ বিদ্যান্ত উত্তর
প্রতা ভারত পরি প্রথম করিয়া ঐ বিদ্যান্ত উত্তর
প্রতা ভারত পরি বিদ্যান্য জানিক তর্জা
ক্রান্ত নাম করিয়ালেন, সম্প্রতি ইলিবারেশ

জাত র গাং কাছেৰ এই বিদ্যার আলোৎপ-কি ক বি হিনি আপান বালাগবস্থাপর্যান্ত দেখিতে বালিলেন, তাহার জাতা ও ভ্লিনী নক-লের চান্ত্র ও ব্যবহার ভুলা নহে, এবং পাঠশা-লার্ সজি বালকেরাও বিদ্যাভ্যাদের বিষয়ে সকলে সমান নহে, কেহ উত্তম লিখিতে পারে,

সূচিপত।

প্রথম থও।

١	আধ্য জ	क्टिंद्रव [村宝气
মনতত্ব বিদ্যার তা	ংপর্য্য,		*****	>
শরীয়াবস্থ।র্ণব্	••••	*****	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	ž.
ধায়ুগ্রন্তের লক্ষণ,	• > • • •	•••••	, 4 + + + + +	৩
রক্তবর্ণের লক্ষণ,	*****	13111	*****	8
मृशामदत्रत लक्तन,			***	۶
चित्रामस्यत लक्ननः	* * * * * *	• • • •	*****	¢
মনতত্ব বিদ্যার সব	ল প্ৰধা	ন কারণ,		Š
मरमत्रं मक्ल छन ज	य की	5,		Æ
मिखिंक गरमत मन्द	न खटाः	ই জিয়		សុំ
মন্তিকের ও করে।	ট্র আহ	চ্ছির ভুল	। जो, ···	9
यक काधिक मटनव	,	,		
ইক্রিরও আছে,	,		*****	ŀ
প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের	পরিমা	াণ জাবি	ভকালে	
অনুউৰ ক্রা যা			*****	<u>ه</u>
ইক্রিয়ান স্থাহইতে			ক চিহ	
वर्णम,			*****	>°
মস্তিকের বর্ণন,			F. 6	
マニンしがい マッカ	997779	****	30 600 0 0	>>

হৃচিপত।

		1	Pate:
ই ক্রিয় সকলের উৎসাহ ব	र्गन अवर व	ারস্পার	
ু ভুলা করিবার ধারা,		*******	>2
ইন্দ্রিনকলের পরিমাণ	ও উন্নতি	निर्घण	
করিবার ধারা, ***	*****	. *****	· 🗳
মন্তি কের কোন স্থানে কে	न हेक्सिय	ভাহার '	1
वर्गन,	******		30
মন্তক পরীক্ষা করিবার ধা	31, ··· ·	• • • •	្នំន
মনভত্ন বিদা সত্য কি মিথ		क्षांत्रन	;;,
করিবার ধারা	*****	*****	50
দিতীয়	থগু।	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	· _
· भगे रे खिश अका			
अधम खब्दल		- 4	· ·.
ं इंग्लं हे जि	स्त्र विवत्न।	,	٠,
১। রভিপ্রং, জিল	***	****	76
२। निश्वश्राण्यिः	148974	******	& < >&
ः। भः स्यानश्चर् छि,	****		20
ও ক। স্বস্থানার গতপ্রন্তি,		******	₹ \$
८। वज्रुष्यवृष्टि,	*****	*****	Ġ
৫। বিপদভঞ্জনপ্রবৃত্তি,	71. 最级表示 4	17147#	३ २
^হ । নাশকপ্রবৃত্তি, ·····	e	*****	२७
७ क । थानाश्चरृष्टि,	***		₹8
, ,,	· (7)		. ,

- deliberate	
স্থ চিপত্র	ł.
med 2	٦,

इर्ग है। ज	
প্রাণপ্রবৃত্তি, প্রাণ্ড ক্রম্বের	。对对有
१। त्राष्ट्रनथर्िं,	્રફેડ્ડ મહા
	₹.€
৮। छेनाक्ष्मश्चवृद्धिः	\$ 19
३। निर्मा १था इ.सि.	, 29
र। विकारिकात्र विवस्ता	· Fig.
 वाश्वामत्रक्षत्रिः 	₹ 6-
>>। जांचरणः अवृद्धि,	2.5
>২ ! পতকভাপ্রবৃত্তি,	, 1 00
১৩। দয়াপ্রবৃত্তি,	_
১৪ I ভজিপ্রবৃত্তি, ····	ঞ
>৫। मृष्ठाश्चर्छि,	102
>७। रिडाहिड विद्वहमाथबृहिः	\C.\.
>१। अञ्चलकार्यवृद्धिः,	৩৩
्रेष्ट । बान्धर्याक्षतृत्वि,	ا والم
	₩8
১৯। কবিভাশক্তি ব। সৌন্দর্যাগ্রবৃত্তি,	90
र्। পরিহাসপ্রবৃত্তি,	33
२३ । जमुक्द्रगळावृद्धिः,	199
विजीयं अकद्भा । काटमस्वित !	```
१। बाराई व्याद्वत विवस्त ।	
इतिक्रियः क्रिक्टियः	8 8
the second second	0 0

	স্থাটপত।	
	1.1	可多十年
बनदमस्यित्र,		··· 8¢
अट्बरका		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
भार में जिला		
मर्नाटमीयाम,		
के कि विकास	श्रदेमां व्यवस्था ।	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **
ূহ । পার্থকার্ডি _{স্ই}		1. ••• §¹ y
২৩। সার্ক্তিবৃত্তি		89
২৪। পরিমাণ্ব্তি।	1.0	2
१९० । । विष्कृति		*** 86
२७। वर्ग्युष्टि	A STATE OF THE STA	83
২৭। হানবৃত্তি	A SAME TO SAME THE SAME OF THE	··· • •
ः ৮। अक्रवृद्धिः	A STATE OF THE STA	
१२०। त्यनी वृष्टिः	and the same	જ વા
্ত । হটনাবৃদ্ধি,		2 1 ay 1 200 1 65 14 15
৩১ ৷ কাল বৃত্তি,	***	a a
্র্তিই। স্থরকৃত্তি,	The same of the sa	(t >
৩৩ ৷ শব্দবৃদ্ধি		
	यामहेकिदार विवर्ग	- 09
৩৪। উপমাবৃত্তি,	The state of the s	
,০৫ ৷ হৈত্বভি,		A FROM A C.M.
ৰাহ্যবস্তৱ সহিত	निविश्व क्लान्स्य	त्र मिलन, ७७

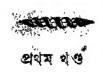
স্থৃতিপত্ত তৃতীয় খণ্ড।

** **	7				প্রাহ
মনঃ শক্তি সক	লের ক্রিং	ার ধারা	,	٠	Jeb 2
ইক্।ইদ্রিয় ও	हिं डाईति	দয়ের তি	য়ার ধ	ার:-	্ ৬১
জ্ঞানে ক্রিয়ের	ক্রিয়ার ধা	at	***	• • •	৬৭
প্রত্যক,		.; ₩. •••	•••	4 + 7	D
অন্তর্বোধ,	, ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ;	3 4 6 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	5 H 4	***	
অনুভব,	*	مُ اللهِ الله		•••	u.
ना बन	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #	الإيا المعه	• 4•	• • •	9.
ইতর বিশেষ বি	वदेव छन्।,	***	***	•	3:
মানসিক চৈত	17 ,	***		* (Ĺ
मृदमादयां श	The state of the s	, **,		***	१ २
অনুরাগ,	, 73 · · ·	***	**	A 43	ష
মুখ ও ছঃখ,		• • • •	110	• •	11.00
देश्या देशया,	3 . 7.7.	jejionić 1 Kare Alam	*** 1	* * *	96
ष्णाननम अ निर्ता	नम्म,	***	***		9 %
ৰভাব,	No. of the state o	4.00		a e	44
পছন্দ, 🛴		\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	*		46
কাম, ক্রোধ, হে	राष्ट्रं सन्द्र	गांदमंग	, 3	NE.	49
মনতত্ব বিদ্যার	Without all all all	S % .		7 14	b->
পাঠক মহাশ্র	1 40 m. 187 24 V	** ***********************************	WATE WA	il.	50

অশুদ্ধ লোগন প্ৰা

P) D	Pro 1	ত ্ৰশু দ্ধ	3 %
Y W	,	2	उ था
્ર	' ا	केशानान	तः अमान ।
	30	The Title	্ত অধিক।
	Michigana	ভতোপিক	্তত অধিক।
3,	5.6	'অন্বর্ক্তি	भक्रवृत्ति ।
9	20	नियुक्तासूगादः	। निरमाभासूमादा
} ;	>	ষ েতাৰিক	যত স্থিক।
	Manager o	चर खाबिकुः	ভত অধিক।
30	W	भागिहिक '	স্মিহিত।
∓ ₹	2.	गः इताश्व 🛒	में भारताश्वा
9.14	, ^	अ(० क	म ज्ला
***	***	नमः शिक्सत	पन शिन्द्रय।
81.	موا <u>ش</u>	175 173	্রজ্পরি।
4 v	,	语性情 "	পুৰা
७ Ъ	58	উৎসা হাহিত	े छेल्माङान्छ।
9.15	7.3	ंच गन्न, बदल्स	ज्या स्यमः।
» i7 i	i.	नी दम्	নীর স ।
p =	ନ	প্রাকাশ	441

মনতভু সারসংগুহ।



कामा अक्रूब्

সনতত্ব বিদ্যাত্যাস করিলে মনের গুণ সকল এবং যে২ ইক্রিয় * হইতে ঐ সকল গুণের প্রকাশ হয় তাহা নির্দ্ধারণ করা যায়, কিন্তু ইহাতে ভুত ভবিষাৎ বলিতে পারাযায় না।

এই বিদ্যার আবশাকতা ও ব্যবস্থার জানিবার পুর্বে ইমার বীজের সভাব ও সীনা জাক মুপ্তা উচিত, এই বিষয় পর খণ্ডে বণিত হইবে

শহী গ্রন্থে মে নকন ইব্রির শব্দ ব্যবহার করা ভিয় হ
 ভাহা সমুদায়ই মান্তিক শক্তির আধার য়ঝাইবৈক, ইংরাজাতে
ঘাহাকে আর্গ্যান্ (Orean) বলিয়া আতে।

সম্প্রতি নমুন্য সাত্রের সভারের উপারান স্থকণ কর্মেন্ডিয় ই জানেন্ডিয়ের ই ক্রিয়ার চিক্ল কেবল ব্যক্ত করিকাম

ক্ষারী, শিক্ষ্য, হিতোপদেশক, ওব্যবস্থাপক, ইন্টাদিগের এই বিদ্যাভ্যাস করা সভ্যাবশ্যক, কারণ এই বিদ্যাভ্যাস করিলে সংসারী ব্যক্তি আত্ম পরিবারের স্বভাব বিশেষ রূপে জ্ঞাত হইয়া তাঁহাদের সহিত তদসুয়ায়ি ব্যবহার করিবেন। শিক্ষক যে বিষয়ে শিষ্যের ক্ষমতা দেখিবেন মেই-ক্ষপ বিদ্যাভ্যাস করিতে অনুসতি করিবেন, হিতোপদেশক যথোচিত উপদেশ প্রদান করিবেন, প্রবং ব্যবস্থাপক উচিত ও উপযুক্ত নিয়ম নির্দারিত করিবেন।

বছকালপর্যান্ত এইমত চলিয়া আরিতেছে বে মন ও শরীর পরস্পর প্রান্তর্ভাব প্রকাশ করে। পূর্ববাণার দেখিতে পাওয়া ধাইতেছে, শ্রীরাবছান

[•] ক বিভাগ থাওে এই হই ইন্সিয়ের বিভারিত বিষয়ণ কর-লাকন কংলে।

⁺ भन्न शृर्छ मृष्टि कल्म ।

नसूरकात महन्ते रेतनकार गत्न कावा कात्र गं, त्यान किया हत वाद्यात स्वामकात का काल कार किन गानी अस्वाक कार्या कार दित वित्वक असन मह-यान शूक्तक कार्या कार्यक हन, त्याप हत्र याहात इक्त गीरहा कहा कार्या कार्यक माक थारक किछ वित्वकता मिक सम्भ हत्र, त्यार थारक, ध्वर वारह-किर्यात स्थ देखा हत्र मित्रीताव हा हरे एवं महन्त्र कान दिश्यक क्षेत्र के केश्न हत्र ना, हेहा किदन महन्त्र क्षेत्राचर मिक्टक माक्कि वा अन्य रक्का सनी कार्यक थारत

मिखातन निर्देश निर्देश मिला निर्देश न

याद्व देखक्ष मान भवत्रच मकल त्माना कृष्टि,

রক্তবর্ণের লক্ষণ উদ্ধন গঠন, অবয়বের মধ্যম প্রকার পুটি, মাইনের বর্থাসন্তর দৃত্যু, চিকুর সমূহ বিরল ও ভাত্তরর্ণ, চক্ষু নীলবর্ণ, এবং বর্ণ স্থানর ও মুখ পাটল বর্ণ হয়। ইহার বিশেষ চিক্ল এই যে শরীরের ভিতর রক্ত শৃতি তেলে গ্রামন গান করে, শারীরিক প্রিশান করণে বাঞা হয়, এবং বহুন প্রকাল হয়। স্তরাং মন্তিকও তাদুশ কলজনক হয়।

স্থাময়ের লক্ষণ কিবুর সমূহ কৃষ্ণবর্ণ, বক্ শ্যামবর্ণ, মাংস সকল সমভার ও দুছতুর, এবং ব-বামান খ্রীমান্হর। মতিক্ষপ্রপ্রবিদ্যা করিতে সক্ষম, একারণ মুখনন্দ্রি বলবান্ ও চিক্ল করিবার যোগ্য আকৃতি বোধ হয়।

পূর্বোক্ত শরীরাবস্থা সকল ক্যাচিৎ ভিত্ত দেখিতে পাওঁয়া যায়, অর্থাৎ একের কতক লক্ষণ অন্যের লক্ষণের সহিত সংযোগ হয়।

[🦟] मिलक निदामश (खंशीर मृत्र ।

হয় বাহাকে ইহার স্বাভাবিক চিহ্ন বলা যায়। এই সকল মনতস্থ বিদ্যার প্রধান কারণ।

ं मरनव मकन क्षेत्र व्यक्तिक, कार्त्रत वामता विक नः नारतत नकण शतिवादतत थि **विवासनाकन** করিলে দেখিতে পাই যে তাঁহাদের বালক বালি-কারা এক প্রকার উপন্দেশ পাইয়াও সর্বদা স্বভা-বের ও পারগতার বৈলক্ষন্যের চিত্র প্রকাশ করে, अवर मक्न जीरवतारे अवस्थाकाता रेखित मक्न বৰ্ত্তমান থাকিলে ভাহাদিগকে কোন কাৰ্য্যে নিযুক্ত করা যাইতে পারে। মনুষ্য কেবল শিক্ষা করাইতে বা উপদেশ দিতে পারে কিন্তু ভাহারা কোন মতেই কার্য্য শক্তি প্রদান করিতে পারে না, যেমন व्यालनादम्त खेटकं दृष्टि कतिद्व व्यक्तम्यालन इस्री একারণ মনের যে ইন্দ্রি যদমুসারে থাকে ভদনু-যায়িক তাহার শক্তি প্রকাশ হয়, যেমন প্রস্কৃতিক অধিক থাকিলে অতি শীঘ্ৰ অঙ্ক গণনা করিতে निश्व इरेट शादा गाता

मिक गरनत मकन खरात रेक्सिय, रेश मर्क

[🗯] পর থাওে তাছ বৃত্তি দৃষ্টি করুন।

मिखिएकत पा.कात अवः পतिमान मस्टरकत वः करताणित याकात ও পরিমানের সহিত তুলা হয়, ইহার অধিক প্রমান দেখিতে গাওয়া নায়, য়য়-বের অস্থি কলন বোধ হয় মিদিকের উপর ছাঁতে ঢালার নায় নির্মাণ হয়য়াছে, এবং মন্তকের আছি দকলের বিশেষ গঠন মন্তিক্ষের আদা প্রকৃতি কপ নির্মাণ হয়। মন্তিক্ষের এবং করোটির আয়-তিতে সমান প্রকা আছে, জীবিত মন্ত্রোর মারি-কের পরিমান কেবল মন্তক মাপ করিলেই বলিতে পারা যায়।

यटगिविक मरनद्र ध्ववान श्वन श्वारह एए गाविक रेखिए माउक वर्जमान आहि, कांत्र पामता कथन गरनद्र मकन अगरक अरकदारन चक्यांचिक করিতে পারি না, যেমন ক্রোধ ও দরা এককালেতে প্রকাশ হয় না। ইন্দ্রিয় সকল উত্তর্থ রুদ্ধি হয়, एएन युवान खारा भर्म क्या मकल कहियात वाक्षा इस मा किन् अधिक वसुरक्त इहेटल के मकल विध-্রে মন রত হয়। আর কোন্ত ইন্দ্রিয়ের ক্রমশঃ ক্ষয় हरा, रामन काम योबनावयां स व्यवसार कि हु क कारत हे हाद श्रवलका चारक ना। यमाणि मस्टि-দের ভিন্ন **স্থান বিভিন্ন গুণ** একাশ না করিত। ভবে যে ব্যক্তি চিত্ৰ বিচিত্ৰ করিছে নিপুণ ভিনি অৰণাই গান করিছেও নিপুণ হউতেন 'আর ক্ষিপ্ত হাইলৈ মনের কোন গুণই প্রকাশ হইত 🕬 তজ্ঞা ভিন্ন ই কিন্তু মন্তিকে ধর্ত্তমান আহে অবশ্য মান্য করিব, নজুবা মস্তিদ্ধের একেবারেই পীডিতাবস্থা এবং নিস্পীড়িতাবস্থা হয় গ্রাঞ कतित, का मदबत मकल छन मक्तार्ल ममञ्जद संशि किश निर्दामी स्टेट शाद्र क्षेत्र किश किश ऋत्मभीश वदः जिन्न तम्भीन्न त्मारकत मखत्कत भवन (य श्राकाद किएक भाषत्रा यात्र, कम्ब्रुवाधिक

প্রতেদ তাঁহাদের আচরতে এবং ব্যবহারে প্রকাশ হয়, একারণ পূর্বোক্ত হন্তান্ত বিশ্বাসজনক।

প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের পরিমাণ জীবিত কালে অন্তত্ত্ব कता यात्र अवश्र के शतिमांनदक अन्यांन्य विषय मग-ভাগ থাকিলে শক্তির সীমা বলা যায়, কারণ সক-লেই বলিয়া থাকেন বে কোন ত্রব্যের পরিমাণান্তু-লারে তাহার গুণ প্রকাশ হয়, যেমন এক লৌহময় ন্তম্ভ সেই লৌহ গুণ অপেকা শক্তিমান, এবং বহৎ এক বাঙ্গীয় যন্ত্র তাহার দামান্য ক্ষুদ্র যন্ত্র হইতে পরাক্রান্ত, আর কলিজার পরিমানানুসারে শরী-রের মধ্যে রক্ত গ্রমণাগ্রমন করে, এবং মাংসপেশীর পরিমাণামুসারে শরীরের শক্তি প্রকাশ হয়, এই প্রকার ধারা সকলকে সাধারণ স্বাভাবিক ধারা বলা যায়, এবং স্বাভাবিক বস্তু এই সকল ধারার নিয়ম পালন করে। মস্তিষ্ণ এক স্বাভাবিক বস্ত स्ट्राः हेशांक **वह नकन** भाता हहेक वर्कन कता कर्खना नटर । अंदे शक्ति मदभा स्व नकल हीत আছে তাহাদৈর ইন্দ্রিরের পরিমাণানুসারে তাহা-দের পরাক্রমপ্রকাশ হয়, এবং মূলেক্রিয় সকলের বে ৰূপ পরিমাণান্ত্রায়িক প্রদন্তা দেই ৰূপ

বাহ্ ইন্দ্রির সকলের তাক্ষ্তা হয়। সকল অবস্থা সমভাব থাকিলে পরিমাণের শক্তি জানা যার, যেমন সামান্য লৌহখণ্ড একখান রুহুৎ কাষ্ঠ অপেক্ষা পরাক্রান্ত হইতে পারে, কিন্ত লৌহ এবং কাষ্ঠ বিভিন্ন ক্রব্য, তজ্জনা ইহাতে যে এবস্থা পূর্বের বলিলাম তাহা নির্ভ হইল। এইকপ শ্রী-রাবস্থা, বাহাবস্থা, ও শিক্ষানুব্যবিক ইত্যাদি, হারা মনের শক্তি সকল কপান্তর হয়।

প্রত্যেক ইন্তির যৎকালে প্রত্ত স্বক্ষাত্তিক তৎকালে শরীরের এক প্রকার সাধারণ আকার এবং গমনের ধারা হয় যাহাকে ইহার স্বাভাবিক চিত্র বলা যায়, কারণ এক ব্যক্তির কোন এক ইন্তির উত্তেজিত হইলে শরীরের গতির বা অঙ্গ ভক্তের এক প্রকার ভাব প্রকাশ হয়, যেমন আন্থানরপ্রতি*শরীরে স্বক্ষাত্রিত হইলে শরীর সমান ও অটল হয়, ভক্তিপ্রতি* স্বক্ষাত্রিত হইলে শরীর নয় ভাব ও চক্ষুকে উর্দ্ধ ভাব করে। আত্ম যশপ্রতি* স্বক্মাত্রিত হইলে মন্তর্ক এক পাশ্রে ইংলে মন্তর্ক এক পাশ্রে ইংলা করে এবং শরীর ও উভয় হস্ত লবং নিমু হইয়া দোলায়মান হয়, এবং শিশুপ্রবৃত্তি* স্বক্ষাত্রি

^{*} शत्र थटल विरमय विजयन मृष्टि कक्रन !

चिक रहेता गुडक शकाशामि हत, अबः भनामा हेलितात अवस्थानात हिक अध्यानात हित्व मिश्रिक शाहेतन। अहे मक्न मानात क्रिक मिश्रिक शाहेता प्रतिक अर्थत काणित्क स्विश्विक शाहेता अकातन क्ष्यत हेराक्ट्रे ग्रुवत जाणाविक अर्थ माधातन जाव श्रिक्ट्रे ग्रुवत श्रिक्ट्रे विकास अर्थ क्रिक्ट्रे क्षात व्यर्थ क्षात प्रतिक ग्रिक्ट्रे श्रिक्ट्रे क्रिक्ट्रे क्रिक्ट्रे क्षात व्यक्त क्षात क्षात क्षात स्वाप्त स्वाप्त अर्थन विकास स्वाप्त क्षात क्षात स्वाप्त स्

নতিক অনুলয়নপে ছই মুঞ্চ হইনা মন্তব্দের ভিতরে ছিতি মান ছঙ্গাতে প্রত্যেক থাতে লমুকু ইন্দির বিভিন্ন পরিমাণে উন্নত আছে, তানিমুক্ত প্রত্যেক ইন্দির বিভিন্ন পরিমাণে উন্নত আছে, তানিমুক্ত প্রত্যেক ইন্দির বিভাগে দেখিতে পাওমা মায়, কিন্তু ইতোমধ্যে কতক গুলিন একক, কারণ বিভাগেশার মধ্যস্থলে পতিত ইইনাছে। কোন ইন্দ্রিরোৎপতি বস্তু দর্শনে তাহার কিন্না জানা বায় না, ক্তরাধ্যুক্তি দর্শনে তাহার বা তাহান কোন অংশের ফিন্না বোধ হয় না, যেনন মাংসপেনা দেখিলো বোধ হয় না যে ইহা জাবশাক্ষতে ক্লিক্তা ও

সন্ধুতিত হইতে পারে, বা দৃষ্টিজনক শিরার গঠন দেখিয়া অনুমান হয় না মে ইহার ছারা আলোক মনোগোচর হয়।

ত্তির বাজির হহৎ ইন্দিয় সকল অধিক, এবং কুদ ইন্দির সকল অপ্পউৎসাহ প্রকাশ করে, সভা তথাচ ইন্দির সকলের কেবল পরিমাণেতে উৎসাহ হয় এমত রহে, কারণ তাহাদের অন্তরাবস্থা, শিক্ষা, ও পরস্পরের প্রভুত্বের দ্বারা ইহার উৎসাহ হয়, তরি-মিন্ত কোন প্রকার জীবের বিশেষ জাতির বা এক জাতির ভিন্ন ব্যক্তির কোন এক ইন্দিয়ের সহিত তাহাদের মধ্যে তুল্য করা যায় না, কেবল এক জীবের কোন ইন্দিয়ের পরিমাণ জাহার অনা ইন্দিয় সকল দেখিয়া নিশ্ব করা যায়। ইন্দিয় সকলের নিয়মিত পরিমাণের তুল্যভার একঃ

हे लि इ मकरल इ शिक्षान मस्वरण जारव विदर-हमा कृतिदन, व्यर्धार मीर्स्य अ श्रद्धः, हे हा दमत वि अकात व्यवस्था दिया गाय, मीर्स्य विकास अधिक हहे त्म नर्तमा कियावान रयः, এবং উट्ट अधिक स्टेटन आद्रा अधिक वनवान रय।

উন্নতি ব্যতিরিক ইন্দ্রিয় সকলের দীর্ঘ প্রস্থা मिथ्री विटमेय विट्यामी क्रिट्रिन, कारत विमालि কোন ইন্দ্রিয় ভাহার নিক্টবর্ত্তি ইন্দ্রিয় হইতে উন্নত হয় তবেই উন্নতি বোধ হয়, কিন্তু সালি-किंड रेलिय भदन मीर्घ मम्बार शाकितन मक প্রকারে মন্তকের দেই ুস্থান একসমান দেখিতে: পাওয়াযায়, এবং ইন্দিয় সকলের গুণের সুমভাব হয়। আর র্দ্ধাবস্থায় প্রায় মন ইক্সিয়া সকলের তেজঃ শেষ হইলে মস্তকের আকৃতি ও পরিমান দর্শন দার। মনের গুণ নিক্ষা করিয়া ব্যক্ত করা यात्र ना, काद्रव वाक् अव्ह मर्नाटन न्युकाव तिथा যায়, কিন্তু ভিতরে মস্তিষ্ক ক্রমশঃ কর পায়, এবং मलदकत अदि कटम श्रुक रहेशा आहिटम, छनि মিত্তে কেবল মনুষ্যের যৌবনাবস্থায় প্রমাণ प्रिटियम, कातन **यहेक्ट्रि मंत्रीद्वत**्हाम हिक महेक्य यन हे जित्र प्रकलत्व श्रानाहिका इत्।

মন্তকের কোন্ স্থানে কোন্ ইন্সিয় স্থাছে হার্ছা উদ্ধয় কাতি মনুষ্যের অধিকাংশে ভিন্নই জীবনা বস্থার জুরিং দর্শনাতে জ্ঞাত হওয়া রায়। এই
মহোপকারিণী বিদ্যা কেবল যথার্থ প্রমাণের ছারা
দৃঢ় রূপে স্থাপিত হইয়াছে, তুজ্জন্য ইহা সভ্য কি
মিথ্যা প্রমাণ দেখিলেই বোধ হইবে, কিন্ত কিপত
বাদান্ত্রাদ সর্বতোভাবে অক্সার্হ হয়।

मिखिएका श्रम्णास्तारं हेक्याहे स्मिन्न, खेशित खार्ल हिखाई स्मिन्न, अवर मिखूद्य ख्वादन स्मिन्न कि कान खादह। हेक्याहे स्मिन्न मेकल के निक्षेत्र खिला यान कान है होता मकल की व्यवस्थित खादह, अवर हिखाई सिन्न मकल के प्रमिक्षहित बला यान कान है होतान खाना कान कि होतान खाना कान कि स्मिन्न खाना कि सिन्न खाना कि सिन खाना कि सिन्न खाना कि सिन्न खाना कि सिन्न खाना कि सिन्न खाना कि

কোন বাজির মন্তর পরীকা করিবার কালে
তাঁহার মন্তর্ক অতি সরল ভাবে রাখিয়া ইন্দ্রির
সকলের ক্রমশং বর্ণনা করিবে, অর্থাৎ যাহার পরে
যে ইন্দ্রির লিখিয়ালি তাহাই বাজ করিবে কিন্তু
আরো দেখিলেই যে মথ্যে ইলিবেন এমত নহে।
ভিন্তং ইন্দ্রির বিভিন্ন অংশে মন্তকে প্রসন্ম
শাকারে কিন্তু লিখিত বিবিধ্পাকার নির্পিত শক্ষ

ষারা তাহাদের প্রসমতাকে পরস্পর তুলা করা যায়।

অভিকৃত। মধ্যম। প্রার অধিক। কুত্র। প্রায় পূর্ব। অধিক। প্রায় কুত্র। পূর্ব। অভ্যন্তাধিক।

কিন্ত এই সকল ভাগ প্রথমতঃ শিক্ষাকারকের প্রতি কঠিন হওয়াতে ভাঁহাদের সন্তোমার্থে পরোক্ত চারিভাগ নির্দ্ধারণ হইয়াছে। অতান্তা-ধিক, অধিক, ক্ষুদ্র, এবং অভিক্ষুদ্র ।

আন্ত বিশ্বাস আন্ত সন্দর্শনে প্রতীত হয়, অতএব যদি কোন মহাশায় শ্বরং এই বিদ্যা সত্য কিন্তা
মিথা পরীক্ষা করিতে বাঞ্ছা করেন, তবে প্রথমতঃ
মন্তকের কোন্ স্থানে কোন্ ইন্দ্রিয়ের ক্ষিতি, দ্বিতীরতঃ তাহারা কি পরিমাণে প্রত্যেক মন্তুরো প্রসন্ধ
আছে, তৃতীয়তঃ তিন্তই শরীরাবস্থা সকলের চিহ্ন
ভ্যাত হইবেন, কারণ ইহাদের ইন্দ্রিয় সকলের
প্রসন্ধতার অধিক বা স্থাপ ক্ষমতা প্রদান করিবার
শক্তি আছে, এবং চতুর্যতঃ প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের স্থান
কিরার ব্যার্থ অর্থ বাহা এই প্রন্থে ক্ষিত হইরাছে,
ভাতান করিলে বিলক্ষণ কপে সকলেই শ্বরং জ্ঞাত

হইবেন। প্রত্যেক মন ইক্রিয় মন্তিক্ষের ভিন্ন হান ৰূপ দাধন দারা প্রকাশ হয়।

এই গ্রন্থের অগ্রবন্তী ছবিতে প্রভাক মন ইন্দ্রিয়ের সীয়ং স্থান বিভিন্ন দেখিবেন।

ষিতীয় খণ্ডা

मन रेजिन्न मुक्टबुत विवत्र। 🚁

যন ইন্দ্রিয় সকল দ্বিঅংশে বিভক্ত হইয়াছে, কর্মেন্দ্রিয় ও জ্ঞানেন্দ্রিয়।

> প্রথম প্রকরণ । কর্মোন্তির ম

যাহারা কোন প্রকার অনুমান করিতে পারেন।
এবং যাহাদিলের সদসং বোধ ও মনস্থাপ উৎপত্তি করিবার ক্ষমতা আছে কিন্তু সেই বোধ ও
মনস্থাপকৈ ইচ্ছা করিলেই অবিলয়ে উৎসাহ বা
পুনবাহ্বান করিছে অসাধা বেশ করে। তাহাদিগকে কর্মেন্ডিয় বলা মায়ন ইলাদের কেবল
ইচ্ছা করিবার ক্ষমতা আছে। কর্মেন্ডিয় দি অংশে
বিভক্ত হইয়াছে, ইচ্ছাইন্ডিয় ও চিয়াইভিয়ে।

३। हेष्ट्राहे खित्रत विवत ।

যাহারা চিন্তা করিতে বা জ্ঞানোপার্জন করিতে পারে না, তাহাদিগকে ইচ্ছাইন্দিয় বলা যাব তাহাদের প্রধান কর্ম এই, যে কেবল বিশেষ২. 36

रेका क्षराम् करत्र, भारे अंकन रेजिय मनुस्यार । यमा नीरवट प्यादि ।

>'। রতিপ্ররম্ভি।

উত্তর কর্ণের পশাতে মূলদেশস্থিত অন্ধি তথা। ভাগান্থ যে ক্ষুক্ত মক্তিম ভাহাতে এই ইন্দির বর্জ-মান আছে।

् शहे छान अधिक विद्युष्ठ, रहेटल हे सिया अधिक इस।

্র্ল ক্রিয়া বংশারকা করণ ইচ্ছা, ও বংশ - হড়ি ব্রী পুরুষের উভরের মনের আকাকনা ৮

শুরতার নতীয় ধর্মপ্রতিপালন করিবার ও কংমাক বশীভূত করিবার ক্ষমতা, এবং অনাসজি ও লুজ্জা শীনতা হয়।

অধিকতা অতিশার কামাতুরতা এবং সর্ফান ক্রী পুরুষ উভয়েরই: উভরের সহিত রসালাপ ক্রিতে ইচ্ছা।

* এই প্রত্তের অগ্রনতি ছবিতে ৷ একের অন্ত নেথিয়া এই ইব্রিয়ের স্থান লানিবেন এইরেণ ২ বিভীয়াদি অন্ত দেখিয়া ইব্রিয় স্থান নির্বাহ করিছে পারিবেন ! নিন্দনীয়ত। প্রভারণা করিয়া ক্রেক্যে রভ করণ অগম্যা গমন, ব্যাভিচার করণ, লাম্পট্য পর স্ত্রী বা পর পুরুষ উভয়ের সহযোগ কর। ইত্যাদি।

পুরুষ জাতির এই ইন্দ্রিয় **অবিক** আছে । ২। শিশুপ্ররুদ্ধি।

ক্তু মতিছের মধা ক্লের উপরি ভাগে এই ইতির স্থিতি মান আছে।

মূলক্রিরা কিন্যা পুরের প্রতি সেই। শি । দিনেরপ্রতি মেহ, পিতা মাতার স্নেহ।

কুডতা বালক বালিকার এবং পশু ও গাঁক শাবকের প্রাক্তির স্বন্ধ সমতা এবং ইডানিবকে কর্মশা কপে ব্যবহার করা, সংখ্যাদির প্রতি অপক্ষপাতিতা।

অধিকতা কা পুঞাদির প্রাণ আগক স্নেহ, সন্তা-নাদির মায়ায় অভান্ত অগবছা এবং তাহাদের ফুংবে ফুংগিত হওয়া। শিশু ও ক্লেহ্ পাত্র সকল লকে বাৎসল্য করা।

निन्दिनीय्रण निर्माणितक व्यक्तार कार्याः प्रमुख्या अवर **जारामिनादक** कार्यास्त्र कार्याः

ण हाता स्थिन श्राश इहेटन अदेशर्ग हे जी हैं। ত্রী জাতির এই ইন্দ্রির **অধিক আছে**। ৩। সংযোগপ্ররন্তিন

শিশুপ্রহৃতির ঠিক উপরি ভাগে এই ইন্দ্রিয় বৰ্তিমা**ন আছে।**

মূল কিয়া অভিপ্রায় এবং বোধের বিষয় সক-नरक अरकवारत वा किम्भाः कान कविर्देश भारता. এবং যে পর্যান্ত শেষ না হয় মেই পর্যান্তই এক नियदः नियुक्त रहेगाः शाका।

প্রতা বেশি করণ বিষয় সকল এবং কর্ম সকল চঞ্চল হয়, ভূতমত: এবং পরিবর্তন অভি-नाय करत, मनञ्जन होनेने क्रुतिरंख व्यक्रम **51**

षानिक छ। दिस् अर्गाटक अञ्चल क्रेंग्री शादक তাহার সমাধান না থবিয়া অন্য ইকোন কর্মে নিযুক্ত হয় না আর মনোযোগ পূর্ব্বক কাষ্য কবিতে পারে।

निमनी त्रका वाक विद्वा पिया प मश्यात র্ত্তবিক ভাষা উপেক্ষা করিয়া স্থান্তরিক অনুমানে ও মনস্তাপে অস্তম্ভ হইয়া থাকা

रेष्ट्रारेक्टिए इत विवत्।

ं क। यहाँनातू गंडधर्दि ।

সংযোগপ্রবৃত্তির উপরি ভাগে এই ইন্দির্ স্থিতিমান আছে।

भूनकिश चित्रिक रेक्टा वा अक शास्त्र वाम क्रिक वरन शिकि क्रिक्टि रेक्टा वा अक शास्त्र वाम क्रिक मिक्टा निकारिक स्टोन वामना करता

ক্ষুত্রতা কোন বিশেষ স্থান সমাদর করে না, আদেশ বা স্বভবন অক্রেশে পরিত্যাগ করে, এবং কোন স্থানের অনুগত হয় না।

অধিকতা পূথিবীর মধ্যে অন্য কোন স্থান স্বভব নের ন্যায় প্রিয় বোধ করেনা, এবং বাদ সান ও স্বদেশ পরিবর্তন করিতে ঘূণা করে।

নিন্দনীয়তা সভবন পরিত্যাগ করিতে ঘ্ণা করণ, কোন স্থানে অসঙ্গত পূর্বান্তরাগ বা স্থান শানুরাগ।

জামাদিগের দেশস্থ ব্যক্তির এই ইন্সিয় অধিক আছে।

३। वक्षुप्रश्राहि ।

সংযোগপ্রবৃত্তির ছুই পাশে এবং শিশুপ্রবৃ তির উপরি ভাগে এই ইন্দিয় হিছিমান আছে মূলক্রিয়া ব্যক্তি বিশেষের প্রান্ধি পক্ষণাত। বন্ধুত্ব করণ ইচ্ছা, এবং স্কলের প্রতি দ্বেছ।

পদতা অপ্রণয়ী, স্নেহ্ শ্বা, অধিক আলা-গান বা বন্ধুতা করিতে অনিক্ত, আর ভাহাদের নি'ং তা অধিক ক্ষতি স্থাকার করে না।

অ ধকতা আলাপ করিতে ব্যগ্র এবং তৎপর চর, অ^কব বন্ধুত্ব কথন ভঞ্জন করে না, এবং অভ্যন্ত মাত্য হয়।

নন্দনীয়তা কোন বৃদ্ধে বা আজীয় ব্যক্তির গোকান্তর হঠলে অধিক খেলান্থিত হওন, আর নিওণি মনুষ্যকে সম্মান করণ, ও বল লাভি কিয়া বহু ব্যক্তির সহিত একত হওন বা একত করণ ইচ্ছা। ৫। বিপদভঞ্জনপ্রবিভ।

বন্ধুত্বপ্রবৃত্তির পাদে এবং রতিপ্রবৃত্তির উপরি
ভাগে এই ইন্দিয় স্থিতিমান আছে।
মূলকিয়া শরীর,বিষয়, এবং মন্স অপকার,
বিপদ, এবং বিপরীত উক্তি হুইতে রক্ষা করণ।
কুর্মতা নির্বিরোধী, অসাহনী, ভীত, শক্রথ
সহিত আপত্তি না করিয়া বরং অরণাপম হয়।
অধিক্তা ধারণাক্ষম, সাহনী, এবং আপত্তি

क्रिंटि श्राक्रींड, विवाप घंठाईएउ वा श्रास्टिवस्क रहेट श्राकाञ्की जंदर वोपासूचीमी रहा।

निक्तनीयुठा विवासी हहेएछ, व्यासालएछ (म:कक्तमा क्रिट्ड हेव्छा, अपैः दिश्राम व्याद्धानिक
हछन। एडअ ची, ग्राह्मक्रूक ए कल हिश्रम।

आभाषित तर समाय पारित अहे रेक्टिंग महान्त्र आह्य ।

। मामकतार् ३।

কর্ণের ছিলে: ব্রুক উপরি ভাগে এই ইনি স্থিতিয়ান আছে।

মাক্রিয়া পির্জিণ করিবার বাঞ্চা হিংসক জান নাশ করিবার ইচ্ছা, এবং ভক্ষণ জন্য জীব হতা কর

কুত হ' শকানব্যক্তিবঁধাতনা দেখিতে পাবে না, বা কাহাকে ধাতনা গোলা, আরু অপচয় করিতে মানস হয় না।

অদিকতা শর্মদণভয় সন্দর্শন করায়, আঘাও কবে, বা নাশ করে। তেলম্বী, বিরোধী।

নিন্দনীয়ং শিপথ অনর্থ জীব হিংসা ও নিষ্ঠুবভা, অশাম্য প্রতিহিংসা, ক্রোণ, বাক্য এবং বাবহার অন্যায় পটুতা, আর জীব হত্যা করিছে वाड्या।

• ৬ ক। খাদ্যপ্রবৃত্তি।

क्टर्नेत मन्यूटथ एवं ज्ञानितक त्रश वना यात त्महे शास्त अहे हेलिय वर्डमान आहाः

भूगकिया भरीत थात्र खना जाकत्नका, व्यास थाना अवा विद्वहरू। कतिया शक्ष कता।

ক্ষুত। পরিমিতা হারা, স্থাদ্যভক্ষক, আর कक्ष अभारत माथुका धवर मन्ताविशुक्त ।

অধিকতা স্থাহ্ন কেলেগ্ৰী, অত্যন্ত কুষাত্ত, এবং ভে তান করি**তে আহ**লাদিত।

निन्दनीय 'वहर्डाका, अरः मामक क्रवा वायशातकाती, आत जकन कर्तान या भाग कत्रान वा वुम त्मवत्न जानमा शैन।

প্রাণপ্রাকৃতি

মন্তিদের অধোভাগে এই ইক্রিয় বর্তমান জাছে, कीविक मादन इंशात मन्मर्गन रव ना।

মুলক্রিয়া জীবিতাবস্থায় কাল্যাপন করবে ेला, वा याजितिक बाज तका केतरन हेला। क्रका अभन्न रहेट प्रा करत, बीविट वा भनत्त अथज्ञ करतः, श्रीतं क्रिशावशा हरेल मितिए। हेक्शा करता

্রিনতা আনেষ ক্লেশ্র বিশিষ্ট ইইলেও পঞ্চর পাইবার বানিছা, আর ভূবিষাতে জীবিত থাকিতে দুচতর আগাঁ।

থাকিতে দৃত্তর আশা।
নিদ্দারতা বিনাশহহতে অভান্ত ভন্ন পার,
এবং উহাংশ এক্ প্রকার বায়ু রোগগ্রস্ত করিতে
পারে।

'भ्। शार्थने**अवृद्धि**।

 নানকপ্রবৃত্তির উপাব ভারে বিপদভঞ্নপ্রব তিথ সপুথে এই ইল্লিয় স্থিতিসান, সাহে।

भून कियान दिशाशन ता विवाद दाइश ७ कम-ठा, धद९ अन्ताना हेल्लिस म्कल्सू श्रीक्ट शंदवत भनन काती।

ক্ষুত্রতা সরল ও নির্মাল, বা প্রতারকের অধীন ইয় এবং যে রূপ মনে উদ্য় হয় সেইরূপট্ট কথান প্রকাশ করে, ৩ যে রূপ বোধ করে সেইরূপ কর্ম ও করে, অর্থাৎ আন্তরিক বা বাহ্যিক সমান ভাব হয়।

কাশ করে, দুউভাপূর্বাক মনের মানস সকল পূর্ণ করে, প্রবদনা করিছে তৎপর হয়।

নিন্দনীয়তা কাম্পনিক ব্যুবহারী, মিথাা-বাদী, প্রতারক, মঠ, বিশ্বাসঘাত আর অপ্রতায়ী ইত্যাদি।

्रे भोगोनिर्धत्र रिमुष्ट वाङि नदरनतं धरे हेक्तिस् क्षेत्रवाश्राह्य ।

৮। উপার্ক্তনপ্রবৃত্তি। গোপনপ্রবৃত্তির অংগ্রাপরি ভাগে এই ইন্তির বর্তমান আছে।

মূলক্রিয়ার বিষয় উপার্জন এবং ভোগ দখল করিবার বা সঞ্জয় করিবার ইচ্ছা। 🛊

কুজভা শ্রেপ্রায় করে, জব্যের এলা শ্র-হেলা করে, বা বৃদ্ধাবস্থার ও পীড়িভার্স্থার নিমি-ত্তে উপায় করিতে হেয়জ্ঞান করে।

অধিকতা ধনোপার্জন করিতে অল্রান্ড,সক-ল বিষয়ে পরিমিত ও নিয়মিত বারী।

নিন্দনীয়তা কোন সম্পত্তি বা ধনোপা-ক্রেনে অপরিমিতাকাজ্জা। অধুম লোভী, রূপন, অপুছারী ইড্যাদি।

३। क्रियानकहि ।

े उभारतम्बद्धारम् । अर्थे देखित वर्षमान भारत्

পুলক্রিয়া নির্মাণ করিবার বাঞ্চী, শিণ্প কর্মে পট্টতা, ও কোন প্রকার যন্ত্র গঠন করিতে নিপুণতান

ক্রত। কোন প্রকার অস্ত্রশস্ত্রাদি বা আধান ন পাত্র কুঁৎসিত বা অসভাতা ৰূপে অব্যবসায়ীর ন্যায় ব্যবহার বা নির্মাণ করে, শিশ্প যন্ত্র সম্প্রীয় কর্মকারী হকতে হুণা করে।

অধিকতা শিণপ যন্ত্র সহস্বীর কার্য্য নির্বাহ করিছে বা কোন বস্তু নির্পাণ করিছে অধিক শারীরিক পরিঅম করে, এবং চিত্রকারী, খোদ-কারী, যন্ত্র নির্পাতা বা গৃহাদি নির্পাতা, ইত্যাদি কর্মের যে ক্রমী সেই স্কুল ব্যবসায়ীদের এই ইন্দ্রির অত্যাবশাক

নিন্দুনীয়তা শীঘাত করিছে বা বিনাপ করিতে কোন প্রকার অতঃ নিশ্মাণ করণ, এনত কোন অত্রবা যন্ত্র গঠন করণ স্বাহাতে হানি হইছে পারে। र । किन्छा हे सिट एक विवत्र में

এই দকল ই ক্রিয় ইচ্ছাই ক্রিয়ের সহিত একত্র হঠলে এক প্রকার মনের উদ্বেগ বা চৈতন্যের চিব্ল দেখিতে পাওয়া যায়, ইহার সংখ্যে কতক কিন মন্ত্রেতে ও অন্যান্য জীবেতে ভিতিমান এতি এবং কতকগুলি কেবল স্বতন্ত্র করে। মন্ত্রেতে আছে, একার্য় চিন্তাই ক্রিয়েকে নীচ ও মহৎ বলা যায়।

> य मक्न विश्वाद स्मार्टिश्व अस्तर्भानः कीर्टिश्व जोटिह जोडोत निवर्ण !

२०। जामानगळात्रां है :

স্থানানুগতপ্রিভির উপরি ভারে হানে।
শিশ্য গাকে সেই স্থানে এই ইন্দ্রির ছিভিমান।
আছে।

খনকিয়। আত্ম মান্য করা, আত্ম স্বাধীনত। এব স্বৰী সূত রাখিতে বাঞ্জা করা, আর মর্য্যাদা, গীরব, বা সামান সর্বা শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করা।

কৃত্ত স্থাং অথোগ্য ও নীচ বোধ করে। শূনতিমানী, মধ্যাদায় শবং ভারিছে অভাব হয়। অধিকতা খ্যাত্যাপন হইতে গুরুতর তেই। করে, মর্যাদাবত ও অহস্কারী, স্বরং আবদ্ধ কর্মে প্রবৃত্ত হয়, আর শাদন করিতে বা অধ্যক্ষত। করিতে ইচ্ছা করে।

নিন্দ্রীয়তা আত্মলাঘা সাথারের সাত্র-মত সংস্থাপনের নিশ্চয়, ও গবিকে । কুলীনাডি মান এবং প্রজার প্রভূত্ব বাঞ্ছা করণ ।

,>> । **আছাযশপ্র**র্ভি।

े আত্মাদরপ্রবির ছই পালে বন্ধুত্রপ্রবৃত্তির উপ-রি ভাগে এই ইক্রিয় বর্তমান আছে।

म्नकिया चितात महिल छूनः इरेबात वाम-ना, यम উপार्कन कतिवात ७ ट्याले इरेवात रेक्न कान वाक्तित चालाविक छन जना मणान कतन

স্মতা অনোর প্রাদর্শ ভাগ্রাছ করণ, মিষ্ট বাক্য কহিতে ও সৌজনা করিতে না জানা। পরের ধারা, বাবহার, এবং সভাতা মুণা করণ।

অধিকত। ব্যাপিত হইতে বাঞ্চা, প্রশংসা। ও নিন্দার জ্ঞান,প্রশংসা ও উপাসনা করণ স্বভাব। ব্থাভিমান, এবং স্থালতা।

मन्द्र नात्रश्य ह।

নত্তির বী**ছন করণ স্বগুণ প্রকাশ করণ, অতাত্ত** সমাদর করণ।

১২ । সতর্কতাপ্রস্তি।

আন্ত্রমশ্প্রবৃত্তির পাথে বিদ্বুত্প্রবৃত্তির সন্মুথে এই ইন্দিয় ডিভিযান আছে ।

সুনারিকে প্রাথিক কার্তান ছঙ্ক, বিগদ বিরু দ্বে অত্যোসাবধান হ ওল, সন্দেহ করণ, ভয় করণ।

মুক্ত আসাবধানতা হঠাং বিপত্তি ঘটনা।
ভাষ্ট্রভা ও অপ্রানামদর্শিতা। ত্রুনাহ্ন এবং
আম্মুক্ত কার্মিতা।

অধিকতা নিদেহ বা আশস্কা করণ, সাবধান ২ এন । এই দৰ্শিতা ও একা বিষয়ে মনোযোগ, িপদ ঘটিনুধি কথে আনিতে পারা, সদা আছি-রক্ষ ও অভিক্যা

নিক্তা ব্যালাপিছার ভীর স্বভাব, মিধ্যা তরে অভান্ত ভাবিত স্থান মুখনি, ও ভারসাহীনত।।

অ মাদিপের দেশস্থাক্তির এই ইক্রিয় অধিক। প্রবল আছে।

২৩ | দয়াপ্রতি !

ব্রহ্মরক্ষের সম্পুথে এই ইন্দ্রির স্থিতিমান আ**ছে**।

মূলক্রিয়া শনুষা জাতিকে স্থা করিবার ইচ্ছা, সাধারণ দাভব্যতা, সরসান্তঃকরণ। উপকার ও দ্যা প্রকাশ করণ।

শুক্রতা বার্থের নিমিতে কার্যে এরতি। নাতব্য করিছে না জানা, পর ছ^{্র্র্ন} নোচন করিতে কঠিনাস্তঃকরণ, এবং নার্ক লোকে প্রাত্মণা।

ফ্রনিক্টা নিংস্বার্থতা, দয়। প্রকাশ, নাতৃত্ব, ছুংখিতের প্রতি স্নেষ্ঠ, অপরিচিত ব্যক্তির প্রতি মঙ্গলাকাক্ষা, আতিথ্য প্রকাশ করণ।

নিক্দনীয়ত কিয়ার নিনিত্ত অপর্যাপ্ত ব্যয়-অপবার্য ও একাদিক্রমিক দি করণ, মিখ্যা তুঃখাবিত ইতিহাস অবিধানিধান করণ।

> যে সকল চিত্তাই জিয় কেবল মনুষ্টেতে আছে। ভাষার বিষয়ণ।

১৪। ভক্তিপ্রবৃত্তি।
বিদারজ্যে এই ইন্দ্রিয় বর্ত্তমান আছে।
মূলক্রিয়া ভিক্তির বা মান্য করিও
সমাদর করণ, নম্রতা হওন, বা মান্য করও
স্কৃতিতা কোন স্থাপিত বা নিয়মিত রা করে।

আছিকাদি ধর্ম কর্মের প্রতি স্থাপ মান্য করণ, ক'র্মন্যা, অবাধ্যতা ও রাজ বিরুদ্ধাচারন

অধিকতা যে সকল ব্যক্তির উপাধি বা বয়আধিকা এবং প্রধান গুণ আছে তাহাদিগের মান্য
করণ, পরমেশ্বরের অর্চনা করিতে গদারত থাকা।
নিদ্দনীরত বিশ্বক কোন মতে ব্যথা হওন, ক্ষমতাপর ব্যক্তির নিকট সংগতা ও অধীনতা বীকাব
করণ।

वालकनिटनते अहे शिक्स श्राम निम् शाकाटण अवाता इस. अमे अत्मक मृष्णिख तमथा निम्नाटण। >৫। मृष्णीश्रम्हाः।

একরদ্রের পশ্চাছাগে আ**ন্নানরপ্র**তির সন্মুখে এই ইতিয়ে বর্ত্তমান সাছে।

মূল ক্রিয়া সিম্নুষ্টের নি**শিতত্ব, অবিরত চেই**)। দুচুপ্রতিজ্ঞা, নিষ্কারণ **স্বভাব**।

ক্ষত। তত্ত্বা যোগ্য নহে, মনস্থ পরিবর্তন করে, অক্লেশে মনস্থ রোধকরে, অপ্রবীণ হয়।

অধিকত; হির সভাব, মনস্থ ও বাসনা তাগ ক্রিতে অনিচ্ছু,সূচু এবং কাঠিনা প্রতিজ্ঞা। নিন্দ্রীয়তা অবস্থীভূততা, নির্বোধতা, মনোর নিষেধ অগ্রাহা কর্ন ইত্যাদি।

১৬। হিতাহিতবিবেচনাপ্রন্তি।

্দুট্টাপ্রর্তির ছেই পারে আখ্নশালরতির সন্মুক্তে এই ইন্দিয় বর্তুমান খাছে।

মূলকিয়া বিনীত সভাক যথাধাযথার্থ নোধ পংগ্রহুতি, স্থনীতির যোগাতা ও মিল জানগোচর করণ।

কুরত। ভিদ্ধের কারণ অত্যাপ থেদ ও অনুতাপ করণ। অনীতি বা ধর্ম বা কর্ত্তরা কর্মের প্রতি সামানা মানা কুরণ।

অধিকত। কোন কর্মে প্রবৃত্ত হইবার পুরের কন্দ্রবা কি না ইহা বিবেচনা করণ, মহন্ত্র ও যাগা-থিছতা। সত্যতা, ধর্ম প্রতিপালন, নৈষ্ঠিকতা এবং শ্রহা এই সকল বিষয়ে ননোধোণী হওন।

निक्तनीयञ्चित्रं कर्ट्यं नामाना जानि इहेटल अञास श्रिक कड़न ।

>৭। প্রত্যাশাপ্রবৃদ্য।

अभातत्यात छ्रे शात्य वित्वहना अवृत्ति मण्ट्रास्थ धरे रेजिस द्विमान शाहर। भूगकिया विद्या जाना कर्तक अविद्यारण सूथः अ मक्ता अवना कर्तन, अवनायुक्त रखने।

ক্ষুতা বিংকে জনাহনী, প্রিয়মাণ,ও নিরা-শ হওন, অধিক উনেয়াগ বা চিস্তা না করণ বিংক ভাষকতা উল্লামিত ও প্রকুল হওয়া, ভবি-

याटङ कि ता इटन अम्ड विचान कर्न छवियाद स्थ विद्याप मध हहेत्रा वर्डमान क्रमा खूनिया याका।

নিন্দনীয়ত। মিখ্যা আশা, ভবিষ্কাহত বিশ্বাস, জুরা খেলা, কুসনস্থ করিতে প্রবৃত্তি, মনেং নানা প্রকাব বিশ্ব কপেনা করিয়া চিন্তা করণ, অসম্ভব চিন্তা।

১৮। আশ্চর্যাপ্রবৃত্তি।

অনুকরণপ্রতির* পাত্রে এবং প্রত্যাশাপ্রবৃ-ভির সমুখে এই ইন্দিয় বর্তমান আছে।

মুলক্রিয়া অভুড, মুতন, চমৎকার, মনোহর, ও অসাধারণ বিষয়ে বিশ্বাস করণ।

ক্রত্তা কোন অস্তব বিষয়ে অপ্রত্যয়, প্রত্যয় করিবার পূর্বে প্রমাণ দর্শন, কোন বিষয়ে

^{*} ७१ शरक अनुकर्वश्रवित स्वाम मृष्टि वक्रमें।

বিশেষ প্রমাণ কর্মাইলৈ সভা বেশ্ব করণ, ভাবৎ আক্র্যাবিষয়ে সক্ষেদ্ধ করণ।

জানিকতা অসম্ভব চিত্র, উপদেবতা ও শুভ বিক বিশাব করণা ভয়ানক কথোপকথন বৃদ্ধি করম হত্যাদি।

निमनीय का वास्तु के निमान को कर्या, यातृ निति, जैनेटमवेका के अञ्चलि माल को अकल अञ्चल शूर्वक यांगा नजन। स्टब्स वर्ख्यान व्यान वाक्षीय वा युक्तिया विमान कुक्त वर्ख्यान व्यान क्या कजन।

১৯। কবিতাশক্তি বা সৌন্দর্যপ্রতি। উপার্ক্তনপ্রস্থির উপরি ভাগে এবং আল্চর্যা প্রবৃত্তির শাসে এই ইন্দ্রিয় বর্ত্তমান আছে।

মূলক্রিয়া সৌনুর্যো, প্রেমাকর্ষণ, এবং স্বাভা-বিক ও প্রক্রিম কবিভাষোগ্য জন্য প্রাভ অব-লোকন করণ । পূর্ণস্ব, স্থামতা, এবং কোমলস্থ ইচ্ছা করণ।

ক্রতা উত্তম স্থভাব পূন্তা কবিতা রচনা বা-পাঠ করিতে অনেতা নিক্ষিও সামান্য কর্মে উৎসাহ করিতে পারা। অধিকত। ভারুক, মান্দেশন্ত ত বিষয় সক লকে গোধন ক্রণ: ক্রিতার্তনা করণ, উভ্যাতা বাঞ্চা করণ।

নিশ্নীয়তা শনের র্থা উদ্বেশ, জীবনের কর্তব্য ও যথার্থ কর্মে নিযুক্ত না হইয়া শিখা ভাবনা সাগরে ১০০ হওন

ा २०। भेतिशमसन्छ।

আল্লাপ্রত্তির ও কবিছাশক্তি বা কৌলুয়া জংভিন্ন সমূর্বল এই ইন্ডিয়ে বর্তমান আহেব

মূলজিয়া অমলিন ও বিপ্রীত ভাব জ্ঞান গোচর করণ কোন দ্রব্যের এবং গুণের পরস্পর একা দর্শন

ক্ষণ পরিহাসজনক বিষয়ে সুণ্প এতাতি, কদাটিং আপনি কৌছুক করণ বা অন্যে কৌছুক কানিলে অহী হওঁ পদার্থের কোন অবস্থা কিয়া কল, এই ছুই, বিষয়ের পরস্পার সমন্ধ বা সাদৃশ দেখাইলে ভ্রান্তি জন্মাইতে পারে।

্ অধিক্তা উপস্থিত মৃত্তুতির ক**রিবার ক্ষমতা,** উপস্থিত বজ্তু। শক্তি, মনোরঞ্জুক্তা, বাস্তুক্তা শিক্ত **প্রং হালো**ংপাদকত। হয়।

२>। अञ्चर्गश्यहिं।

नेशक्षित छरे भाटन धरे हैकिस वर्डमान तरह

্র্যুক্তিরা* তেওঁ অন্যের চরিত্র, অফ ভঙ্গ, ও কর্ম।

चूक्का देनश्रा बद्ध जानमें कतिएक जक्रम हरा, अजाव ७ जाउँवन जनाशावन वनः मृतीजुक हरा।

শবিক্তা ছিলবেশী, বিজ্ঞাপী, ও পরিছা-শক হইতে পারণ হয়। বেটিত সংসাদ ব্যবহার ও রীতি গ্রহণ করে।

নিন্দনীরভা উপহাস জন্য ব্যঙ্গ, বহু অপ পরের উড়ামী, অবং বঞ্চনা বা মন্দ করিতে কোন প্রকার বেশ ধারণ কর্মী

क्रम्णीकता, क्रमांश के कि यह मून कार्य र। इक्तिरवह

[ो] भूमण अशीर है जिस असे इहेंद्र व क्षेकां ब्र कर हता।

इ जिस्कित ज्ञाहर जाहित हहें हि एवं श्रेक व नकत है।

[।] निकासका अर्थाद सहिद्यास कार्या छेदशब देश।

श्री मकेन है जिस मह्यारक थे बनाना की बरक यह मरनागठ रवाय मकन बन्ध वाय नख मकने कामरगाएत कताय, हेराइन्द्र क्षयान कर्य बरे रव वस मन्द्रांत्र प्राप्तित प्रवर्ग कर्यात अवश्री विश् मिरगत थेन थे भवण्यत मस्क मनारेग्न क्ष्म । हेरा किन बर्टन विज्ञ हरेग्नाइ, वाय्रे क्षिय, रवायन-हे जिस, थे बसुमान है क्रिक्स

ः वाष्ट्रेलिएसेन विवतंगी 🗀 🚟

उनामी नाकि मकरेन निवास थारकम स्व नाक् हेक्टिएस बाता अर्थम अञ्चल आमानिकात महना-गंज हस, हे अञ्चलादत दाक्क हेक्टिस मकन भून हहे द्वा महनत हेक्टिस मकन भूष हम, किछ हेरा संज्य नहर, कांत्रक आन्द्रकात्मक नीव्यत नाक्ष्टिक्टस मक्ष्या हहेट अथिक भूष है, बक्का विक करहा आत्मक मर्गन क्रिसा बाकिट्स स अग्राज्ञ ७ विक साकि क्रिम अकात केन्द्रमाना शहिसा काहादन नामा।

व हा भविष कर्णासिरंत्रत के ज्ञादनस्टिर्वेत किया অক্রেশে নির্বাহ করে 🕞

वांश्रेकित संक्षा देववन सदेखंड मा बार वर्द्धत गठेन अख्दाह हुईसी मन्हिंदिय नक्टलस অনুধাৰন ক্রায়, তাহারা বাছবন্তর স্থায়িত্ব, বা छन अदे मञ्ज जानिएक नाइत ना, रामन वक्तू वर्न নির্ণয় করিতে পারেনা, কর্ণ কখন সর বোধ করিতে ুবা উৎপত্তি কুরিকে বা কোন কথার রচনা করিছে পারে না, নারিকা সৌরভেতে ভান স্মরণ রাখিতে পারেনা, অথবা স্পর্শ পশু পদ্দী প্রভৃতিকে স্বাভা-বিক আম করাইতে বা মনুষাকে শিপ্প কর্মে রঙ করাইতে পারে না।

वाञ् यरखत * बाता कमना छेना किन इश, कहे অমুভব মিথ্যা, কারণ অনেক জীবেরি বাহা অঞ্ আছে বে সকল ভিন্ন কর্ম করিবার নিমিত্তে रुषे रहेतारह, दिखे जहारिक श्रीवर कर्य कान हिंह मिथिए नी अयो यात्र मी, स्वमन यान-

করিলে শীত দুরীভূত করিতে পারে কিন্ত তাহা
দিগের এত অধিক জ্ঞান নাই।কীট পতঙ্গাদি এবং
কোনহ নংজাদি সকলের স্পর্শ করিবার অধিক
উত্তম যন্ত্র সকল আছে তথাত তাহাদের ক্ষেত্রতথ্যের কিছুই বোধ নাই।

বাহ্য যন্ত্র সকল এক অকার থাকিয়াও ভিন্ন কার্য্য করে, বেমন খরগোঁবের ও শশকের এক প্রকার চরণ থাকিলেও থরগোষ কেবল মাঠ সধ্যে বসতি করে, এবং শশক গর্জ মধ্যে স্থিতি করে, व्यवेश जन्माना शक्ष मक्रांनेत जिन्नेर यक शाकित्नेष এক প্রকার কার্য্য করে, যেমন হত্তির গুও মনুষ্য ७ वानदात **र ए**ख नगान कार्या करते। वानदात रख কাঠবিড়াল ও শুক পক্ষির চরণ অতাই অতুলা কিন্ত कर्मकल यटखन काता है हाना मकटल है थाए। ज्वा ধারণ করিয়া ভক্ষণ করে। ফলতঃ যদিকাৎ মনুষ্টোর হত হইতেই শিশ্প কর্ম উৎপত্তি হয় তবে কি कात्रत्व हिंबकात्री, त्यानकात्री, अ वनाना कर्म-कतिता छ। हाटमत मनः , छ। छ ता इछ हरेला हर হইতে স্বীয়২ কর্ম করিবার যন্ত্র ক্ষেপণ করে? আর कि अकारतरेना मसूरेनाता शक्त नि अनुमा

দারা চমৎকার এবং উৎকৃষ্ট কর্ম উৎপত্তি করে? এবং কোন্ ব্যক্তি হুস্তের গঠন সন্দর্শন করিয়া শিশ্পকর্মের পারগতা নির্দ্ধারণ করিতে পারে?

वाश्यक्ष प्रकल अञ्चल आवश्यक अ वावश्यत्र (वाश्रा, इंशाप्ति प्रहिञ्ज अञ्चल १०० प्रकलत महक्ष आह्म। वाश्यक वाजित्त्रक अञ्चल १०० प्रकलत क्रिशा श्रकाण इत्र ना, वथा माश्माहाती अञ्च मकल क्षाहारणत श्रीवर एख अ नथाश्राक वाजित्त्रक नाण क्रिक शास्त्र ना, किन्छ के नाण क्रिवाल इंका मनः हहेरक छेन्त्र इत्र, क्षेकात्र वाश्यक्ष प्रकल अञ्चल वाश्रा प्रकलत कार्या निक्वाह क्रिवाल निम्ल इहेशाएम।

विष्टहेलिय नकत नक्षता अख्य हेलिएयत महिल किवल पर्यात नागात नियुक्त रुखारिक खारा-एत किया मकत विद्यान हरेयार किया वाल-अतित्यन। वित्यन किया मिखारके माराया वाल-तिक किया बाता निष्मम हरेरक भारत ना किया बिल्यन किया किया किवल वाङ्-रेलिय बातार मिखार करता बाता किया किया करता रेलिय बातार मिखार रुखा थारक। ইন্দ্রিরের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে যে তাহাদের বিশেষ ক্রিয়া বা অবিলয়ন ক্রিয়া চিহ্ন করিয়া বাক্ত করা অত্যন্ত কঠিন। ইহাদের মধ্যম ক্রিয়ার জন্য এমত নৈক্ত্রী ভাবে সংযুক্ত হওয়াআবিশ্রক, ষেমন স্থানপরিবর্তনশিরা ও স্পর্শাস্ত্রী অন্তর্গন্থ ইন্দ্রিয় সকলকে সাহায্য করে, স্থতরাং মন্তকে ন্তিত সমস্ত ইন্দ্রিয়ের সহিত সংযুক্ত আছে।

তথাত মনতত্বজ্ঞ মহাশয়েরা অবিলয়িত বাহ্ ইক্রিয় এবং প্রধান অন্তর্গুইক্রিয় সকল বিশেষ-বপে বাক্ত করিতে চেফা করেন, কিন্ত ভাঁহারা অবশু পারণ রাখিবেন যে প্রত্যেক রাফ্টক্রিয় কেবল এক প্রকার অবিলয়ন ক্রিয়া নির্বাহ করে, প্রত্যেকের বিশেষ শক্তি আছে, এবং প্রত্যেকের কিয়া ভাহার নির্বাহিত আছে, এবং প্রত্যেকের কিয়া ভাহার নির্বাহিত মিয়ারস্থারে প্রকাশ হয়। ইক্রিয় পরিপত্ হইলে ভাগোদের ক্রিয়া সকলও প্রিপত্তর, এবং ইক্রিয় প্রতিত হইলে ক্রিয়া সকলও তদনুর্বাপে পূর্বা চাল্যা থাকিলেও নিশ্-

वाश्रहेकिस नकरलत शतन्त्रात नःरभाषरन्त्र विव-

রণ অধিক কথিত হইল, কিন্তুইহাতে এমত বুঝার ना त्व देवान वाश्रदेकिय जना वाश्रदेकिय स्टेट সীয় ক্রিয়া নির্বাহ করিবার শক্তি উপার্জন করে। कानी वाकिता विवास बादकन त्य अक सकि जल-मध क्तिता बक्त बर्ल मृष्टि रनाएत रहा ने छा, शतख স্পর্শ দারা সরল বোধ হয় ৷ কিন্তু মনু দারা বিপ-রীত জানিয়াও চক্ষু দারা বর্টিকে বক্র বোধ করিবে, स्टर्कु जन मृत्या अजु (तथात वक् इरेवात कातन না জানিলে ভাহা বুঝিতে পারা যায় না। প্রত্যেক वाश्रहेलियं अना वाश्रहेलियात ताथ উৎপত্তি ক্রাইতে পারে না- বা অন্যের প্রিক্ত বস্ত আমা मिश्राक कांच कराहर शांदा मा, वा वाश्र वश्चत অন্য গুণ পরিচিত করাইতে পারে না, কিন্তু रेरादम्ब श्राक्शव नेद्रमायन क्रमजा आदेह रेरी। षरण श्रीकात कतिक। भई श्रकादत हक्कः न्यार्भ नः दमायम कतिएछ शास्त्र, धर्वः न्याम हिम्हः नः दमा-धन कतिए शादत । यनिकाद समा क्रिक् आमारमत অজ্ঞানাৰস্বায় এক খণ্ড পাতলা কাগজ আমী-पिरुशंत करे अञ्चलीत माना बार्ट्स **करते आ**मता न्मर्भ बाह्य त्यां कतिए अक्तम रहेव अम

হইতে পারে, কিন্তু পরে ইছাকে দুল্লবন করিব।
অনেক ভরল ক্রব্য জালের নাায় বাধ হয়, এবং
প্রিন বা ব্রিনিপ্রে ইছাকিবরে নির্ম করিতেঅনমণ হয়, ক্রিন্ড গোণ বা রসন ইক্রিয় ইহাদের
শুল প্রতেদ এক কালে ব্যক্ত করে। এই প্রকারে
যত অধিক বাছ্ইক্রিয়ের বিশেষহ টিছু বোল
করিবার স্থীয়ং ক্ষমতা আছে, ৩০ অধিক পরণ্
বের সংশোধন হয়, তলিনিজে বাছ বস্তু স্থান
রপে অবগত হইবার জন্য দুক্ল বাছইক্রিয়ের
শাহাম্য জারা তাহাদের পরীক্ষা করিবে, কারণ
বে গণ একেব গোটর না হয় সে অবিলয়েই
অন্যের গাচর হয়।

प्रशिखित्र।

मन्दः वाक्षरेजित अद्भक्ष देश हरू, कातन क्रिक्तः वीद्यत जेशित जातन वाद्य अम्ब नट्स, जिल्लान शाद्य वर्षाय न की जै.फिट्ड बाद्य। विद्या याना कि छ द्रिक्त १ क्रिक्ट म महम्बा, नवैश्चार वाद्याव द्राध इन । जात अन्तक रोजिएएत । देशतं अनाम। वाद्य भक्तक न्ताथ कथान

ताशरे विदेश विवतः।

रामदनिस्यः।

এই ইক্সিয় ছারী কেবল **আয়দিন বৈধি হ**য়। খাদ্য জবা ছারা দৈহের ধারণ ও র্দ্ধি হয় তিমি-মিত এই ইক্সিয় অত্যন্ত আবিশুক।

खंशिक्य।

এই ইন্সির ভারা সৌরত বোগ হব, ইছার গন্যান্য কার্যাও আছে, যথা দূর হইতে কোন দ্বোর আণের ভারা মনুষ্য ও পশু তাহার ছারিছ জানিতে পারে, আর পশু সক্ষ আপন্য খাদ্য দ্বা গ্রহণ করিতে এবং শক্র বা মিগ্রের নিক্ট আগমন জানিতে পারে, যথা "পশুসানেন পশুতি" শ্বনেন্তিয়া

এই ইন্দ্রির দার। শব্দ বোধ হয়, এবং ইহ। অন্তরম্ব ইন্দ্রিয় সকলের অধিক উপকারক, বিশে-

ষতঃ কর্মোন্দ্রিয় সকলের উপকার করে।

मर्गातिस्य ।

এই ই ক্রিয়ের দারা আলোক ও বর্ণ এবং ইছা-দের অধিক রা স্থাপ প্রকাশ দেখিতে পাওরা যায়, আর মন্ত্র্যা ও পুশু প্রক্রী দুরস্থ বস্তুও দর্শন করে ्। देवन्थन देखिदशत विवृत्रन्।

बहूँ मक्न रेक्सित महादादक अवन्त्र श्री कि महा-लदक व्यवास पंचत विकि आठ न ताम व्यात । श्र बढ मंक्दलन विद्यान चा ज्ञानिक श्री कि लात्र न्त्र निव्य विद्य मंघन दाथ केतियात माझि अनाम केतिए क्रमके व्यादहा

। भार्यकात्र्धि ।

अंग्रेशक भागिकः ्रालाशित धर्र रेकिंग श्रिकिः भौने भाष्ट्र।

মুসজিলা—এ ইন্টির মধ্যে যে নকল জীব এ কড় আন্ত ভার, দিগকে ভিত্ত করিয়া জ্ঞান পোচর করণ।

কুদ্র হা ব ভিন্ন করিয়। অবলোকন করণে পানার্যা, পৃথক্থ বিষয়ণ কারতে বিরক্তি, এবং বিজ্প করিয়া সায়সংগ্রহ করিতে কঠিন বোধ ধ্যা

অন্কিতা কোন দ্রব্যের সরণ ও বোধ দনতা অধিক হস, দৃষ্টি করিবা মাত্র ভিন্ন হ, বস্তু দেখিতে প ওয়া যায়। বিভিন্ন বস্তুর, অন্তস্ত্রানা বৈতিকী, ও জিপ্তাস্থ ইয়া

২৩ জোকতিরতি

जीवक पूर्व श्री स्थानसम् को स्थापिक कि रिक्षित्र बर्डमार शाहर

় এই স্থান অধিক স্থানা হতলৈ ইন্দিয়ের প্রার্থক । হয়, এবং নয়ন অনিকটবর্ডি হয়।

্যুলজিয়ালি দীমা বোধ করণ, কোন জবৈয়ে। মঠন ৰা আক্ষান অবধান করণ।

ক্ষুত্ৰ জীব সকলের এবং তাহানের শ্রী
রের ভিন্ন স্থানের শ্রেণীপুর্বক সমিলন জ্ঞাত
হইতে অক্ষম হয়, গঠনের ৰাল্পি বোগ শক্তি প্রা

অবিক্তা বংগার্থ গঠন বোগ করিতে পারেন,
নন্ত্রেগর বদন ও ভবোর গঠন অবধান কলিতে ও
স্মরণ রাখিতে পারেন।

২৪ । পারিমাণরুত্তি

বর্ণরাজ্য * উপারি ভাগে এই মূলা দৈলে এই ইন্টিন্ত বর্ণনার্শ আছেয়া

भूमिकियां स्थापित्रं, शातमतः सुराष्ट्रः, श्रद्धश्र् वा क्रमेष्ट्रं, भन्ने मकटमति मसक्कष्टानं इत्रव

⁸⁴ शास वर्गर छह छात्र मृष्टि कक्स

क्यक। अतिमान दा प्रतेष घरा व बदश कार्य

क्टरें के शादर ना। अधकता दिनाम अदिनान नीर्घ साह अ उन्ह

অন্তর্গত করিতে পারে, অন্তদ্ধ টির দারা ক্র শ্রাম বৃহৎ জানিতে পারে।

२৫। ভারি বর্ত্তি।

পরিলাণরতির প শে এই ইন্দিয় বর্ত্তমান আছে।
মূল ক্রিয়া পথিবীর এমত এক ন জ আছে

মূল ক্রিয়া সকল জব্যকে আকর্ষণ করে, এবং কে ন

জব্য বেগ বা শক্তি দারা স্থান পরিবর্তন কালীন
ভালা এক দব্যের প্রতি আঘাত করিয়া তাহাকে

স্থান হইতে দুরী করণ করে, এই চুই বিষয়ের

রীতি জ্ঞানগোঁচর করণ

জুরতী কোন দ্রব্যের ভারিম্ব ও **প্রতিবন্ধ** অনুমান করিতে অক্ষম হয়।

অধিকতা শিশপ যত্র সহজীর শক্তি সক-লের আশু সাভাবিক জ্ঞান হয়, পরিমাণের কুলাতা বোধ হয়। নউকীর ও রজ্জুণরি নৃত্যকা-রির প্রাথক, জার যে সকল মন্ত্যা বংকেপরি বা জমোণরি নৃত্য করে তাহাদিগেরও আবশ্যক।

दर्गामसहित्यास्य विवस्त ।

২৬ । রণরক্তি।

ভারিত্বর্তির পার্টে **এই** ইন্টিয় স্থিতিমান আছে।

মূলকিয়া বুর্গ, দাগ, ছোব, এবং তাহাদের সম্বয়, এই নকল জানিতে ও শ্বরণ রাখিতে পরো।

ক্ষুত। কদাচিৎ বৰ্ণ প্রধান করে, বৰ্ণ নিরী-কণ করিতে ও তুলা করিছে কঠিন বোধ করে।

বাৰকতা বৰ্ণ তুলা করিতে, শ্রেণী বন্ধ করি-তে, মিশ্রিক করিতে, স্থান বিশেষে মংযুক্ত করা-ইতে এবং পারণ রাখিতে স্থানুভব করে ও নৈপুণা হয়।

२१। स्वान्त्रि । 🖟

পার্থক্যরন্তির পার্শ্বে এবং প্রিমাণরন্তির ও ভারিত্বর্ত্তির উপরিভাবে এই ইন্দ্রির বর্ত্তমান আছে।

মূলক্রিয়া বিষয়ের পরস্পর সর্বন্ধ জ্ঞান, স্থানের স্থিতি স্মর্ণ।

ক্রত। ভূগোল বিলাও হান জ্ঞান জন্প হয়, স্থান সারণ রাখিতে পারেন।

व नत्रकृत्ताथिट श्रविक कगणा-शब इय, खदर प्रश्न ७ जिल्लिकनक श्रव याहेल অক্রেশে পুদরাগমন করিতে পারে, ভূগোলরভান্ত कानिए अ स्वर्गाञ्च साम ध्रिशिए रेव्हा करत। ্ ২৮। অন্ধর্তি।

নয়নের বহিন্দোণের অগ্রোপরি ভাগে এই रेक्षित्र वर्षमान चाट्य

মুলাক্ত্রা নংখ্যার সম্প্র জ্ঞাত করণ, সংখ্যা अन्त ଓ दिनाच कर्तन

मुक्का नामना विषदा अवः जक्ष विषदा लशरू अ नात्र हीन हर, वीक गणिक विमा अ ক্ষেত্র পরিমাপক বিদায়ে অত্যম্প নৈপুণ্য হইতে পাবে।

व्यविक्की महत्तर चह शर्मना कतिए पारत আর অঙ্ক বিদ্যা উপার্জন করিতে ক্ষমতাপ ন হয় ২৯। শ্রেণীঘৃতি।

বর্ণর্ত্তির ও অক্ষর্ভির মধ্য স্থানে এই ইন্দ্রিয় বর্তুমান আছে। মূলভিয়া ডিবেরি অবয়বের শ্রেণী পুর্বাক

স্থাপ্র ও ভাবের জানগোঁচর করণ।

ক্ষুত্রতা কোন করা, বামনস্থ, বা অনুমানের । অত্যত্প ধারা বা শৃত্বলাপুর্বকু স্থাপন বরণ।

অবিকতা ধারানুসারে ও অবিকল কপে এবং পরিপাটীক্রমে সকল দ্রবাকে স্বং স্থানে রাথে এবং সকলকেই খান প্রদান করে।

েত। ঘটনার্ত্তি।

পার্থকার্ত্তির উপরিভাগে কুপাল মুধ্যস্থলে এই ইন্দ্রিয় বর্তমান আছে।

মূলকিরা পূর্বে ঘটনার এবং উপস্থিত ঘটনার স্থারণার্থ জ্ঞান, যেকোন কার্যের সম্বন্ধ জ্ঞান হওন।

ক্ষুদ্রতা দৈর্ঘটনা ভুলিয়া যায়, কোন ক্রিয়া বা ঘটনা স্মরণ রাখিতে পারে,না

অধিকতা ঘটনা সকল বিশেষ ৰূপে সরণ রাধিতে পারে এত ব্যাপার এবং ইতিহাস সর লিত ঘটনা নিঃসন্দিধ্য কথে জ্ঞাত থাকে। প্রচুর উপাধ্যান বলিতে বিজ্ঞাহয়। ন্যাচার জানিতে প্রীতি জন্মে।

🎎 💛 🐫 ७३। कानइंडि। 🔭

चंद्रेमात्र्जित ७ ज्ञामङ्ख्ति शार्यातुर्गङ्ख्ति छेशति

ভাগে পরিহাসপ্রবৃত্তির সমুধ্যে এই ইন্দ্রিয় বর্ত্তমান আছে।

মুলকিরা বিশ্ব কার স্থায়িত্ব অনুক্রম, এবং এককালীন বে সকল ঘটনা ক্ইয়াছে তাল জান

ক্ষত্রতা নির্মাপত দিন ও কালের কালে বাধিতে হক্ষম হয়, নির্মারিত সময়ে আদিতে বা বাহতে অক্ষমতাপম হয়।

কাল কাল কালে কালের সাজাবিক জাল হয়, স্থানুতা দেখিলে খতাও আহ্মান গণে ৩২। স্বরুতি।

পারহানপ্রস্থাতির **ও কালহাত্তির পার্গে এবং অন্ত** রাজ্য ও শ্রেণীর**ন্তির উপরিভাগে এ**ই ইন্দ্রিয় বর্ত্ত-মান নাচেছ।

মূলকিয়া ্রি**শব্দের ও স্ক্র**ের সমস্ব জ্ঞাত করণ স্করের **নিলন** অবগত করণ।

ক্ষুদ্রতা সুস্থর যথার্থ বাপে অনুভব করিতে গারে না, নির্মান্ত্রণারে গান করিছে বা বাদ্য করিতে পারে না, কোন উভয় স্বরের ভেদ করিতে অক্ষম। অধিকতা ক্রিনে স্থার কি প্রকার তাহা বিশেষ কপে স্থান রাখিতে পারে যথার্থ স্বরে গান করিতে পারে গীত বাদ্য করিতে স্থাতাবিক ক্রমতাপন্ন হয়

৩৩। শব্দরন্তি।

চক্ষুর কোটারের মধান্থিত যে অধ্যেমুখ অহি ভাহার পশ্চাতে যে বহ্মান্তিধের অংশ তাহাতে এই ইন্দির বর্তমান আছে।

উত্তর চক্ষু যদি ইন্পূপ্যান্ত্রাহির হইয়া নিমুছ। ভবে এই ইন্দিরে অধিক হয়।

মূলক্রিয়া শিক্ষ বা শক্ত প্রকাশের চিত্র ছার অর্থ বোধ করন, লিখন ছারা মনক বিষয় প্রকাশ করণ।

শুক্তা কোন ব্যক্তির মুখে কোন কথা শুনিয়া মরণ রাখিছে পারে না, অত্যাপ ভাষা, অন্যান হয়, বন্ত্র করিতে আশক্ষা করে । অস্প এবং সামান্য কথা ব্যবহার করে।

অধিকতা বাক্য ব্যবহার করিতে ও রচন। করিতে অধিক ক্ষমতা হয়, অবলীলাক্রমে কংলাভহে। অনায়াসেই নানা ভাষা অভ্যাস করিতে পারে।

নিশ্দনীয়তা অভিশয় রাক্য বায় করণ, এবং বাচালতা।

ं। अञ्चलामहे जित्रतः विवतं।।

এই সকল ইত্রিয় দারা তর্ক রিছর্ক করিছে পার। থারা আর ইহারা অন্যান্য ইত্রিয় সকুলকে স্থীয়হ কার্য্য নির্বাহ করিছে, সক্ষম করে।

্র ৩৪। উপমাবৃত্তি।

ঘটনাবৃত্তির উপরিভাগে ও দরাপ্রমৃতির দশুখে এই ইন্দির স্থিতিমান সাছে

स्विक्षा प्रतित गर्दा स्व मक्क विषयं छैनस् इत्र छाहारनेत मान्छ ७ डारवत (मीसर्वा स्मर्के कर्प कानरनाहत कर्दा छूलना रम्छन, रमांब छन् विस्व हमा कर्दा है छानि।

কুত্রভাত কোন বিষয়ে উপমা দেখাইতে প্রায় পারে না। সামান্য উপমা দিছে হইলে বছ বাক্য ব্যয় করে, দৃষ্টান্ত স্বারা উপপত্তি করিতে বড় পারে না। ক্রপক কথা প্রায় ব্যবহার করে না।

অধিকৃত। নানা প্রকার দৃষ্টান্ত দেখাইয়া কোন কথা সুসাইয়া দেয়। প্রমাণ বাক্য ৰূপক করিয়া দর্শাইতে বাঞ্জা লাকে। বিবিধ প্রকার সার **अञ्चर्याम** द्याप, अ महन्त्र क्षेत्र मक्ष्म म करता

৩৫। হেতুর্ভি।->

े छेशनःवृद्धित ग्रे शार्ट्स अहे **हेलिस वर्डमान** चार्ट्स

अलिक्या कि कार्या रहान् यह अर्थात कर्म कार्यात कर्मात कर्म । कान मर्थ नम्भून करिट केरिक सार्या अर्थ राहन (स्टाम निवस्त्र अर्थान कार्यन कर्ममान कर्मन ।

^{*} বে দ্রুল ই জে। সলুগ্রহী ও সম্মাণোচর হক তাই
দিগকে হত্তের আরা স্পর্শ করিবার আর্থপ্রক্তা লাই, বেবল
দশন করিবেলই কাড়াদের উন্নতি স্থিক কি ক্ষান বোধ হইছে
পারে।

বাছ বস্তুর স**হিত সন্তু**ষোর জ্ঞানেন্দ্রিরের মিলন।

মন্ত্রের মন ও বাছ্বস্তু সকল এক কর্ত্তা হইতে উৎপন্ন হওয়াতে উত্তম ৰূপে প্রস্পরের যোগা-याश रहेशाट्य, विद्यहना क्रितित्व हेश क्रांच ্ৰথা যাথ, এবং ইছা *স্বাজ*েভাৱৰ সভা ৰোধ ^{৬ য় ।} যদি কোন পাঠক ম**হাশয় মনোনিবেশপূর্ব্বক** ্তান স্থাভাবিক বস্তু বিবেচনা ক্রেন, তবে প্রথম ২লাল স্থায়িত্ব, দিওীয় ইকাৰ আকৃতি, তুতীয় পরিনাণ চতুর্ব ইহার ওজন, গঞ্জম স্বস্থান বা जना वञ्चत प्रहिल खारनत मम्त्र, वर्ष हैशत थ९-লব সংখ্যা, নতুম অংশের ধারা বা শারীরিক ্নির্ক্তপ্র অ**উম** ইছার ব্য**তিক্রম,** নব্য **কত কালে** ন বাতিক্রম **জয়ে, দশম অন্য বস্তুর সহিত** সাদৃশ্য ও ভিনতা, একাদশ ইছার যে সকল ব্যতিক্রম হইতে পারে এবং যে সকল ফল দশিতে পারে। আর বদি লেই মহাশয় পূর্ব্বোক্ত বিষয় সমুদ্রের এক সংজ্ঞা প্রদান করেন, তবে এমত বোগ হইবে নে ভাঁহার ঐ বিষয়ে বিশেষ জ্ঞান হইয়াছে এবং ্তিনি অন্যকেও বুঝাইতে পারেন। 🐪

উপরি উক্ত ধারতিসারে দর্শনশাত্তেরও শিক্ষা श्रमान कतिरा हरेरत् । **अस्तरकत छ**छिषिमा। उ ধাতু নিৰপূণ বিদ্যা শিক্ষা করিবার ইথেট আভা-विक वृक्षि थाकिरनर् देश ठाराज्य अमर् **द्रिम् जैनकै ७ वि**मदनोत् क्षन छ्वान इप्र, कात्र । यदन-কের এমত অক অম আছে যে এ উভয় বিদ্যা বিষয়কু নান। কুব্যের নাম ও **ভাহার শ্রে**ণী বিভাগ জানাই তাহার প্রধান তাৎপর্য্য, কিন্তু ছাত্রদিগকে তাঁচাদিগের স্বীয়ং মনঃ ইন্দ্রিয় সকল জ্ঞাত করা-ইলে এবং বাহু বস্তুর সহিত ঐ ইন্দ্রির সকলের निर्फिष्टे मञ्चलात शतीका (मथाईतन, उँ। हाता वि-ষয়ে নিত ও আনন্দ পূর্ব্বক চিন্তা করিবেন, স্কুতরাই অক্লেশে শিক্ষা হ্ইবে। কোন বস্তুর জ্ঞান করিতে हरेल अथन ठाहात शासित्व मतनात्वान हस्र পশ্চাৎ পার্থকার্ত্তি ঐবুস্তকে তাহার আপন শ্রেণীত করে, আরুতিহৃত্তি তা**হা**র আরুতি জ্ঞান করার, এবং বর্ণরুদ্ধি তাহার বর্ণ বোধ করায়। এই কপে जमाना खेन नर्कटलत नइक् निर्मिष्ट रहा निक्क প্রথম ছাত্রদিগকে এই প্রকার শিক্ষা দিয়া প্রশাস वञ्च मकत्वत्र नाम, त्थानी, वर्ग, अ आखि निका

कताहरवन, किनना ज्याता जाहारनत किवन छन ও পরস্পার **সমন্ধ জানাইতে প্যারিবেন। এ**ই প্রকার শিক্ষা করাইলে ইহার সকল উপকার দশিবে। যে ব্যক্তি পূর্বেষ যে আকৃতি দেখিয়া ভারার অভি-শव (शोन्हर्ग 🐗 **वरमोन्हर्ग कि**ष्टूरे वि**दरमा कर**त मारे अमर वाकि है याने शूटब्वाङ डेशटन्स शाय छटव শবিলয়ে সেই আফুতির তারতমা বুঝিরা জাহলা-भिक्ष वर्षेत्र, अतः हालना श्वातः है **अन्याना हेक्तिरात** কল পদ্ধারন করিবে। যে ইন্দ্রিয় যত অধিক **রহ**ৎ হয় জাদ্ধগ্ৰক শিক্ষাতেই তত অধিক আনন্দ হয়-किन्दु 🚈 न बेलिय ज्ञान मधाम अकात छेन्नक हरे-লেও প্রেট শিক্ষা হঠতে পারে, অতথব জ্ঞানে िन्द्राप्त अहेक्य ठानना धना विमानिया गं**मना**-भगरत्त ह्या: भारतक्ष्या नाहे। खनक्व श्राजा-বিক ও ক্রতিণ ব্সতে আমাদিগের মন **শকির** পর্ত্তি জন্মে তাহা খন্তেমণ করিলে সকল স্থানে প্রচুর দেখিতে পাওয়া বান এবং যদ্যপি পাঠক मराभिम यथन (मर्भ वा नशंद ग्रंथ) श्रमभाशमन করেন, তৎকালে পূর্ব্ব কথিতামুসারে তাঁহার নানা প্রকার মনঃ শক্তি সতর্কত। ক্রে নিযুক্ত করিলে অগণনীয় আনন্দের স্থা দেখিতে পাইবেন অথচ ভিনি তথনও ভাহাদের ঘথার্থ নাম ও ভোগী ভানিতে পারেন নাই

তৃতীর খণ্ড।

মনঃ শক্তি সকলের ক্রিয়ার ধারা। ननः मुक्ति मुक्ति श्रीयर किया निकार केत्रिया थारक जर छेपशुक बद्ध किया द्वान इहेरन हु दिय উচিত, दा जावश्रक किया मकन छेरशे हि कात । प छा अधिक अवन हरेशा कुश्रशामी इहंदन निक नीय रस किर कान रेखिय कुछ इटेल डाहात अकि निक्तित नरह, विमन प्रशिक्षहिक क्यू हरेटन - ठूर कर्ण मिक इस ना वतः अदनात छःटश कि निष्ण हम् वर्दः कर्जवा कर्णा करि हरेसा बारक, वात यथन जुक है सिन्न कूप रह उथन छ। रहे एहे एठ অপর প্রবল ইন্দিয়ের বাধা জন্মিছে গারে না, স্তরাং দেই প্রবল ইন্দ্রিয় হইতে নিন্দিত কার্য্য উৎপন্নহইতে পারে, যেখন উপার্ক্তনপ্রবৃত্তি ও भागन्यवृत् अधिक अवश हिङाहिङ विदेव हमा-खितृ डि अ असुमान खण्डा, भारे मकने अकळ मररवान হুইলে চৌর্ঘা বৃত্তিতে রউ কারতে পারে । বিপ্রদ-ज्ञन्यवृद्धि अ नाम कथवृद्धि अविक क्रियतान् प्रवेश रेहारनत महिल नशंधितृति कुले हेहेरन मिल्रंत কার্যা ও কলছ উৎপত্তি করিতে পারে।

अध्यक रेखिय दिनि काउरन वर्गाविक रेरिन वित्नय अकात द्वाभ छे० शांख करेत, रेहा छ। हाइन इ श्राजाविकावना इरेट उर्ला रहा, वर विवस ষিতীয় খণ্ডে বৰ্ণিত হইয়াছে। বৃহৎ ইন্দিন সকল व्यथिक अवः मूज रेखित मकन व्यक्त श्रीत कार्ना করিতে বত হয়। প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের স্বীয়থ ক্রিয়া নিৰ্বাহ করিবার ক্ষুতা আছে কিন্তু কেহই দীমা অতিক্রম ক্রিভে পারে না, ইহা প্রকাশ্র দেখিতে পা अयो यारेटल्ट् अंदर रेशातनत् मत्या त्कर् त्रजावकः भन्म नदर, काद्रः। जार्श हरेटन जागा-निगरक भाभ, कर्म्स अवृष्ठ कतिवात बनाई ऋरि कर्ड। आमानिकात हेन्द्रिय मकल अधि कतिसाह्न अगठ नित्र इस । 🖰

ইছাই জিয় ও বিভাই জিয়া দিকে কেবল বাঞ্চার বারা অবিলয়ে ক্রিয়াবান করা যায় না বেদন আমরা ভয় জন্য, দরা জন্য, ও ভক্তি জন্য মনোবিকারকে অপ্রকাশিত রাখিবার বাঞ্চা হইলে তদন্ত্রপ করিতে পারি না। এই উত্তন ইজিয়ের শক্তি ইজিয় উল্লেজিত হইলেই স্বার্থা বিত হয়, এবং প্রবেগকে যে ইক্ছা বা মনকাশ

में भीरेमा (नम्र) जारा जामानिटेशन कानिवान रेफ्टा र्छक् वा ना रहेक् अवश्रद्ध छात्र रहेक् । स्मन স্কুত মক্তিক সর্থাৎ রতিপ্রবৃত্তির ইন্তিয় আত্তরিক कात्रव मात्रा मञ्ज रहेटल श्रीय व्याध ज्याहेमा देश **भवः भरे रेजिए छेर्जिन एरेटिन के व्याप्यत** वाथा मिट्छ शाहा याग्र मा । आमामिटनात अमर्फ कमठा चाट्ट राकाता है हात किया दे कार्या होता প্রকাশ করিতে বা দমন করিতে পারি, কিন্তু এই ইন্দ্রি উত্তেজিক হইলে পর, ইহার বোধকে यामता रेष्ट्रामक प्रमुख्य कतिए वांना कतिएड শারি না। সতর্কভাপর্ত্তি প্রজ্যাশাপ্রর্ত্তি, ভক্তি-**॰ दृष्टिः ७व॰ विमाना है सित्र मकत्वंत्र अवस्थ**-বার অবস্থা হইয়া থাকে ৷ কোন্য সমূরে আমা-क्तिरात अवर्गाश आना के आनका अ**उद्धर**क উলয় হয়, যাহা বাছ কারণ দারা উৎপদ্ধ হইয়াছে এমত আমর। নির্দিট্ট করিতে পারি নার এই প্রকার বোৰ শকল পূর্বেকাক্ত চিন্তাইক্রিয় সকলের আপন किया हरेटकर छेरशम हम्न, धनर वास हम्र वे **্জির সকলের স্থীরহ স্থানে রক্তু অধিক গমনা** भगन इरेटनरे के नकल किनात छन्त्र एकेटल भारत।

विधीयण अर्थ मक्न रेक्सिय आमापिटगत रेक्स ব্যক্তিরেকেও রাছাইস্ত শূর্পনেই উত্তেজিত তুইয়া शादक, वर्शक देव बार्श वर्ड मर्नात वर देखिय डिल्क बिठ हरेट शास्त्र देन देख पाचित्वरे **डा** हात्रे किशा अधिकाम इस् । किम् छःथकनक विषय **प्रिंति मंश्राश्चर्यक किशापान् इत्रं ७**वर हेशत विटम्ब (कार्क) मकत छेरशिक करते, विश्वमक्तक বিষয় দেৰিকো সতৰ্কতাপ্ৰবৃত্তি অবিলয়েই বিপদা-শক্ষা বোধ করাইয়া দেয়, এবং প্রেমাকর্ষক বিষয় अक्षेत्रिक स्टेरन भोन्न्याथङ्खि है इस भोन्नर्यात (वाथ गटन निद्विणिष्ठ कृदत्। अहे भगल विषद्य कार्या कतिवात कर्मणी वा अक्रमणी आमानिटशत ইচ্ছাতেই নির্ভর করে, কিন্তু বোধ করিবার ক্ষমতঃ वा अक्रमण अर्जामुन नटह । भदीतावन्ना अन्य হইলে আন্তরিক ও বাহ্ কারণ দারা ইন্দ্রিয়ের যাদৃশ কিয়া হয় শরীরের উৎকৃষ্ট অবস্থায় তদ-ात्रका **अ**धिक छेखम इहेर**छ शा**रतः।

ज्जीत्र ए मकल रेक्टिस्त्र विषय अक्राध्य किराज्य किराज्य किराज्य रेक्ट्र किराज्य किराज

नीति, बेहालि नक्न दिर्धिनहेक्तिः रेक्टारेक्टियात ७ विडाहेक्टरात यो अस्तिके निक्षिक উद्ध्यना त्यांत्री ज्या वर्षेद्रद्र जैलिथिट नियुक्त इतः ज्य मिट्याक रिना (श्रुत श्रुत किथिक अव । दत कार्या कति-তে প্রয়ন্ত হইবে, কিন্তু তত উগ্রভার সহিত নহে বত ভাহ।দের বাছন্তিত নিরাশিত বস্ত দর্শনে হইতে भीतः । बहेबंश अवदादि र इहिंकित्वते ७ हिटा-ইন্সিয়ের শক্তি এবং পাহরিক দর্শনের শক্তি अञ्चलादा वाद्यत डिझान इब, यमन धक छ्रथा-विषय अश्रुद्धारक श्रासुभाग कित्रल भवर एक्री-अहा छ वन भोकिएन करूना द्वाप हरेंगा कचनर নয়ন নীরেভাসিত হইবে। যদ্যীপ আমরা কবিতা-मकि दा मिर्मिया अहिडित किया प्रमन केतिएं हेम्हा कांत्र छटन आगती टकर्नन रेम्हा कांत्रभा अरे विद्यारेतिक एक विद्यामी कतिए शांति मा किन् भणाता । जिल्लाहरित मञ्क्जाधत्त्व, जामोगत-প্রবৃত্তি, বা দ্যাপ্রবৃত্তি উত্তেজিত হর, এমত বিষয় भागत। अखरत मर्भन कतिराम ध गवन हे जिसहे , উर्दिक्क इरेरवे , धर्वेर कृति शामाकि वा स्मीन्नर्या-প্রীরভিবে কিয়া রহিত কবিবে।

γ गमानि कान् रेष्ट्। रेम्प्रिया विखारे जिस वन्तर कातरन वाजार, कियावान् इयः जारः उद्यादनियम् भक्तर क देशव अवसीय विद्यावर रह अक्त श्रेखद्र দর্শন করিতে এত করিবে ধেমন সত্তর্ভাপ্রারী অধিক কিনাবান্ ইইবে ভ্রানক বিষয় অভ্রে লক করিয়া, আত্তবিক চিন্তা সকলকে চালনী कत्रिटवण, प्रशास्त्रकृषि किञ्चादान् रुहेटल स्ट्यू स्मार ার উপায়ুক্তরিতে বনঃ নিবিক শারেন, ভক্তিপ্রাক্তি অধিক উত্তেজিত হ্টালেমান্তে। বিষ্ত্তে লনঃ নিযুক্ত इन्**टन, উপार्क्स अर्थ**ि भारत ह**रेटल** (४५) १ ए मक्ष्य रुवितात अभादस मनवार १००४ वर्ग । कविता मङ्गिता स्मोतानाथवृत्ति मन्द्रत्यः 😁 👉 पर्क **অপূর্ত্ত করে এ বিষয় সক**্ষা ১ করিবে যাহা কথন কাখার নয়স গোচর হয় মার

रेकारेकिस ७ हिनारेकिता तेना विकास असूगान कल्लानांत काम्डा ना बाकाटि मार्गान मिर्गत य मकल त्वाप ७ मन्डाल डेक्शिंड कृति-बात कामडा बाट्ड डार्ग व्यक्तिक व्यक्ति हैट्ड-किंड वा शूनताहुड कृति व्यक्ति व्यक्ति हैरेवार महे मकल रेक्टियांत विम्ह छन्। नार्गे य क्षिता

बाहित्त्र ता प्रसद्धत (मथिएक, यात्रम त्राथिएक, वा কিম্পনা **ক**রিতে পারে। ভাহাদের কেবল ইচ্ছা ও मनद्राभ कतिवात क्रमण आहि, अर्थार महकात ভাইরা বক্ষান্তিত হয় তংকালে এক প্রকার हेका ७ मनदाश चतुष्ट्य करता

क्षेत्र भिद्रा ७ जमाना वाष्ट्रे सिरशत भितात वांती रवः रेवाथ करण कोश्रांतक "वः शरेक्क्ना" वक्ता ৰায় কিন্তু ইহা কোন ইন্দ্ৰিয় নহে 🛶 🦼

কেহ্২ বলেন যে তাঁহারা হেজাতে মনভাপ দকল পুনরাহ্বান করিতে গারেন, নিদ্দু ঐ সকল ব্যক্তির অনুকরণ এরতি ও গোপনপ্ররতি অধিক আছে এবং শরীরাবস্থাও উত্তম, তাজনা এইৰূপ ললিতে ক্ষমতাপন্ন হন বোধ হয় তাঁহারা মন-अपन मध्यीय । अ नकल अर्थाम माम प्रमुखानन करान जरभरत यनलाभ छेरभन रहा किल रेशाक अतिनद्ध आञ्चान कृता दलिएड शातः। गास मा। ::

বোধন ও অনুমানে ক্রিয় সকলের ধারা এমত नटह हे होता असूमान क्लाना करतः महक्रावाध करतः, हेका श्रकान करत, अवश्य मकन अना हे लिस स्कर-ल (वायक्म जाहारमञ्जू क्रद्रजीकार्य माहावा करत।" "हेका" क्वारंगिस्ट कार्ता विरंगित विरंगित थाता हरेंएक उर्थान रहा किन्त ने भारारक कार्ता वा विरंगित ।
करा क्वा पात्र ना। क्वारंगित विरंगित वा विरंगित ।
हरेरक हेका छेल्लन हरेंगा नक क्वांत किन्न ।
क्वांत क्वांत करता पात्र हेकारे किरान क्वांत ।
किन्नात कार्ता, वा वाक्ष वस्त्र वल कार्ता किन्नान ।
हरेरक शादा, वा वाक्ष वस्त्र वल कार्ता किन्नान ।
हरेरक शादा। हेकारक मर्गत अखिकार गणा कार्ता कार्ता, वा वाक्ष वस्त्र वल कार्ता किन्नान ।
हरेरक शादा। हेकारक मर्गत अखिकार गणा कार्ता कार्ता हेकारक वर्ता कार्ता कार्त

প্রথমতঃ জানেন্দ্রির অন্তরন্থ কারণ দ্বারা ক্রিয়াবনি হইলে যে দকল অনুমান ক্রপনা যোগা তাহারা অক্রেশে মনে উদয় হয়, যেমন গায়কের মনে নানা প্রকার অনাহূত স্বর উদয় হইভেছে, যাহার অন্তর্গতি অধিক বলবান্ ও ক্রিয়াবান্ তিনি সাভাবিক ক্ষমতা দ্বারা সংখ্যা গণনা করেন, ঘাঁহার শাক্তিবৃত্তি বলবান্ তিনি সহকে গঠন বোধ করি-তে পারেন, খাঁহার হেতুবৃত্তি বলবান্ ও ক্রিয়া वान् जिनि अनुगान काटन दिना शतिकारम कर्क करतन, अवः गाँ हात शित हामश्रद्धि वलवान् अ किन्नान् इस का हात मरन दश्कानक वाध न्तकन अगठ अगरत अ अगठ जातन अविकल जेनस हरेर आरक स्व नगरत वा वा जाति का हा-एन जिन्हि हजरन वामना करतन ना।

বিতীয়ত জানে জিয়াবান্ ইতি পারে, অর্থাৎ বিত্তর উপস্থিতি দারা কিয়াবান্ হইতে পারে, অর্থাৎ বে সকল বাস্থাবস্তর এই সকল ইন্দিয়কে কিয়া: বান্ করিবার ক্ষতা আছে, ভাহারাই উহাদেব উত্তেজনা ক্রিতে সম্বহিয়।

্তৃতীয়তঃ জ্ঞানেক্সিয় স্বেচ্ছাক্রেই ক্রিয়াবান্ ইইতে পারে।

कारमञ्ज्ञ मकल वाक् वख्र द्वारा छे भाराहिक इरेट्स विवयं मकल ज्ञान का कर व्याप्त कर के किया "श्रीका" वला यात्र । वाक्ष्टे कि द्यात य मकल मिता जाटक का हाटक स्थाप मश्कार करण श्रीका के भिता पाता के मश्कार वाध्यक्तित छ ज्ञान मोहन कि द्या के कर कर विवयं मकल दक्ष के सिता पाता के कर कर विवयं मकल दक्ष

বোধ করাইতে পারে, এবং প্রতোক ইন্দ্রিয়া, স্বীয় সম্বন্ধীয় বস্তু বেগৰ করে। কোন বি**বন্ন দর্শনীয়ে** বা অবণাতে যাঁহার কোন প্রকার অমুভব দা হয়, তিনি কোন বিশেষ ইন্দ্রিয়ের শক্তি প্রকাশ করিতে चनक २२, विभव बार्वजानिनी चानानन कविर्देश যিনি তাহাদের শ্বর মিলন বোধ করিতে অপারক তিনি স্বরবৃত্তির শক্তি প্রকাশ করিতে পারেন না मां अभाक्षानुमादि अवर छक विकटकर कम जिसर कतिया राज कतिता विनि छ। हारत्व श्रेतं न्यक ও সিদ্ধান্ত বুঝিতে পারেন না তিনি হেতুবৃতির मकि अकाम किटिंड अभारति इन, धर धरेरान ्षमाना रेक्टियत विवेदेत श्रामित्यमं। जच्छमा (ब সকল ইন্দ্রিয় বিষ্ট্রের আকার বেংপ করে ভাছা-मिर्टिश्व (कान ना ज्यान अकें श्रे किया इंट्रेंट देश त्वाभ जत्य जारात्क देशकाक" देशानात् दिखे रेश देशन रेक्टिया मध्य श्री नद्

रेक्षित्रं नकत्वद्व आडाहाक छट्डियमा हरेट्ड प्रश् तिट्ड कान विषय तीर्व हथ धर्वर के क्षिका क "अव्यविष्य क्ला गाह । यहानि अव्यवि अवित हह ष्ट्र रहारक "अञ्चल" हेना गाह । यथन नीड़ा

वा अना कान कातरन रागन हे किराव केरड बना হয় তথ্য অনুপস্থিত বাহ্য বস্তু সকল আন্দোলিত হইতে থাকে তাহাতে ৰোধ হয় যেন দেই বস্তু नकत मभा तथ चिकिमान् जारह अवः जाराटकरे স্থপ্ন বা ভ্রমাত্মক দর্শন হয় । আশ্চর্য্যপ্রবৃত্তির हेन्यिय अधिक वा विकल इहेला श्रायह अहेना कन डेस्পि डि इहेशा थारक । य अकन विषद्भत कण्णना नका मत्न छेएत इत्र, ठाहाता हे सिन्दा-দির **মন্তরস্থ ক্রি**য়া হ্**ইতে প্রকাশ** হয়, কি**ন্ত** বিংশদ্থ **কম্পনা সকলে**র যোগা<mark>যোগ ছা</mark>র। উৎ-পरिव श्रामा। हेलिय नकन व्यवन ७' कियावान् कर्रटन कम्भना नकन क्रमनः नीख उपयुक्त, এवर कोन ଓ अकर्मना इरेटन बीत छात्र । शडीत निका कार्ट्स हे लिये "अकल मण्णूर्नकर्षण 'विध्वास থাকাতে ইহারাও সর্কাতোভাবে স্থলিত হয়। **उत्तिमिट्ड ज्**डूर्द्रीष ७ जञ्चल्ड म्हनत वित्नवश मुक्ति वेलिया थेगा करा बाब ता, किस रेश र्थर्कीक के भागमा है लिस रहेट छेर भन रस। - জানেল্রির কোন কারণ বশতঃ উদ্রেশিত হইলে পূর্ব্ব কম্পিভ বিষয় সর্বস্ব মহেন উপস্থিত করে, আছ-

এব এই ক্রিয়াঁকে "মরণ" বলা বায় এবং প্রত্যেক জ্ঞানেজিয়ের ক্রিয়া হইতে উৎপত্তি হয়, কিন্তু ইহাকে মনের কোন প্রধান শক্তি বলিয়া গণ্য করা যায় না। স্বরহৃতি স্থার স্মরণ রাখে এবং পার্থকার্তি বর্তমান-বস্তু স্মরণ রাখে।

কার্যা কারণ ভাবের পর পর সর সম্বা ও যোগাতা বোধ করাকেই "ইভর বিশেষ বিবেচনা" বলা যার এবং ইহা কেবল অনুমানই জিয় হইতে উৎপন্ন হয় এই সকল ই জিয়ের প্রত্যক্ষ, শারণ, এবং শার্থ করিবার ক্ষমতা আহে। গাঁহার এই সকল ই জিয়া বলবান্, তিনি অনায়াসে প্রত্যক্ষ, অন্ত-বোধ শারণ, ও অনুমান করিতে পারেন।

মনের স্বীয় স্থায়িত্ব এবং স্বীয় কাষ্য জ্ঞানত্ত "মানকিক চৈতন্য" বলাষায়, ইহা দারা ইন্দ্রির সকলের
স্থায়িত্ব বোধ জন্মেনা,কেবল আমাদিগের আপন্ন
মনের কাষ্য জ্ঞাপন করে, কিন্তু অন্যের মনের
ভাব মোল অংশে আমাদিগের সহিত জিল তাহার
কিছু মার জানায় না, এবং কোন্ ইন্দির হুইতে
মানসিক চৈতন্য উৎপন্ন হয় তাহা আমরা জানিতে
পারি লা । একারণ সর্ব্ধ জাতীয় মনুষ্যকে আয়-

বং বোধ করিবাদ কা**হ'ব কি রূপ স্বভাব** ইং নির্ণয় করিতে হুইলে নিতান্ত ভ্রম ক্যো_ন

প্রত্যেক ইন্দ্রিরই বোগ ও কম্পনার মান্ত্রিক চৈতনা জ্ঞাপন করিয়া থাকে, যেনদ স্ববৃত্তি অত্যম্প চইলে স্থরের মনানিক তৈতনা উপার্জন করিতে থারে লা, হিতাহি ছবিবেচনালেকৃতি অত্যম্প হই-লে দর্ম জ্ঞানের মান্ত্রিক চৈত্রা হয় না, এবং ভক্তিপ্রবৃত্তি অত্যম্প তইলে গুরু জনের প্রতি সমানের মান্ত্রিক চৈত্রা হয় না।

"मार्गिरवान हिन्द्र मार्ग नेन्य मार्थ, विख् वीमारनिक्त ७ असूमारनिक्तित <u>वीसर विख्य</u> "मार्गिरवान क्षेत्र मार्गिरवान स्वमान <mark>वास्त्र हिन्द्र नाम</mark> अवस्त हिन्द्र क्षेत्र क्ष्यान क्षित्र मीमारमा क्रमान वान हिन्द्र क्ष्यान क्ष्यान क्षित्र मीमारमा क्रमान व्यापन क्षित्र क्ष्यान क्ष्या

"ছত্রবান" কোন ইচ্ছা বা চিন্তাই জিয় অধিক কিয়াবান কইলে উৎপন্ন হয় এবং বড় প্রকার ইন্দিয় মাড়ে অনুৱাগও তত প্রকার আছে। যথা

ধন্যবাদানুরাগ আঅবশংপ্রবৃত্তি অতাত সম্বর ও किशानिन् इहेरल उर्भन्न इस, ब्राइ धना मुत्रान छेथा-र्ज्जनथ्यवृद्धि रहेए७ উৎপन्न रेग्न। क्लानिसन्न नकन এত ক্ষুদ্র যে তাহাদের এমত গ্রিক ক্রিয়া হইতে পারে না যাহাকে আমর। অনুরাগ বলিতে গারি। বাদ্যের অনুরাগ ও জ্ঞানশাত্রের অনুরাগ, এইৰূপ বাক্য আমরা ব্যবহার করিয়া থাকি বটে, কিন্ত **এই প্রকার বিষয়ে কতকগুলিন ই**ছ্টাইনির বা চিন্তাইক্রিয় শ্বরবৃত্তি ও হেতুবৃত্তি দারা অতান্ত উত্তেজিত হইয়া জানেনিয়ে সকলের সহিত সংলগ रुन्न, प्रदर रेरारे थरे प्रजूतातात पून । छ। त्मिन-য়ের ক্রিয়া ছইতে কেবল এক একার অনুরাগ বিহীন মনের অবস্থা মাত্র উংপন্ন হয়ন স্তরাং এমত কিছুই হইতে পারে না বাহাকে কাম্প-निक अनुतान रेना यात्र, ज्यानि वहेनने अनु-রাগ অনেক গ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় বাসমু-ধোরা স্বীয় স্বভাব পরিবর্ত্তন করিতে পারে না এবং তাঁহাদের যে সকল বাঁঞা হইয়া থাকে ভাহা व्यवश्रष्टे कान श्राजीविक मेनः मिकित मत्त्रायादि উৎপন্ন হয়। 👍

"স্থাও ছুঃখ"। বাছটেতন্যের শিরা বিরক্ত र्हेरल भेतीरतत द्धार छेश्या है है से प्रवर छन्छ्याति বোধকে শরীরের স্থখ বলা বার। এই সকল বোধ में जिएकत महिल भरनाश हरेतन सूथ वा कुश्य वाथ হয়। মরের স্থ্বা ছঃখকে মনের এক প্রকার ভাব वला यात्र अर्थाः यहकानीन मनः य जारत थारक ভদমুষায়ি বোধজ্ঞ করে, এবং ইহারা প্রত্যেক ইভিনের চালনা হইতে উৎপন্ন হয় ৷ প্রত্যেক মনঃ ণক্তি আপন ইচ্ছানুষায়ি ক্রিয়াতে উত্তেজনা পাইলৈ স্থথ বোধ হয়, এবং বিপরীত হুইলে চুঃখ 'বোধ হয়, স্থতরাং' যত অধিক মনের শক্তি আছে ভত অধিক মনের সূর্থ ও তুঃথ হয় ু/্তরিমিতে याहात महाध्यवृत्ति व्यथिक जिनि महास्रा संदेश व्यदनात त्नाम क्रमा कतिर**क जानम** त्वाध करतेन, याक्त নাশকপ্রবৃত্তি ও আত্মাদরপ্রবৃত্তি অধিক তিনি প্রতি বিংসা করিতে স্থথ বোধ করেন, বাহার উপার্জন-প্রবৃত্তি অধিক **তিনি অর্থ**িকবিকার করিয়া রাখিতে क्रशी रन, जवर यारात जिल्लानुष्ठि ও दिराहिक-दिट्रकाथवृष्टि . अविके एकिन समुत्यात साज-त्नाचारक रहत्रकान कतिर**ं जानमिल हम**। अहै-

রূপে স্থা ও জুংখ বাছটেতনোর শিরা ও সনঃ-ইন্রিরের ফলোদ্য় হইতে উৎপন্ন হয়, কিন্তু ইহারা স্বরং জনোনা।

শ্বৈষ্যাবৈষ্য'। বৈষ্য নিশ্চিত বোষের ন্যায়,
এবং ইহাকে দ্যাপ্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি, প্রত্যাশাপ্রবৃত্তি, হিতাহিতবিবেচনাপ্রবৃত্তি, এবং দৃঢ়তাপ্রবৃত্তি, অপ আয়াদরপ্রবৃত্তির সহিত একত হইয়া, উৎপন্ন করে। অগবিতা, বিনয় ন্তিরতা ও
বশীভূততা এই সমস্ত পূর্বোক্ত অনেক সংযোগের সহগামী হয়, এবং এই সকল হইতে
বৈষ্য ও সহতা উৎপন্ন হয়। শ্রীরাবস্থা অতিশ্র
বার্থিত অর্থাৎ স্থূলাকার হইলে কিন্তা মতিমের
অপতা হইলে চেতনা রাহিত্য হইতে পারে
কিন্তু ঘাঁহারা নরের সভাব জ্ঞাত নহেন তাহার।
এই অবস্থাকে বৈষ্য বলিয়া থাকেন।

যাহার শরীরাবছা উত্তম ও সৃত্ব এবং দর্মী প্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি, এবং হিতাহিতবিবেচনাপ্রবৃত্তি অপেকা আত্মাদরপ্রবৃত্তি, বিপদভঞ্জনপ্রবৃত্তি ও নাশকপ্রবৃত্তি অবিক, তিনি বিপক্ষতা ও বাক্যা নয়করণে অধৈষ্যা হইবেন। যাঁহার স্বরুত্তি কালস্থি, এবং কবিতাশক্তি বা সৌন্দর্যাপ্রবৃত্তি
ক্রিন্তিনি কল গীত বাদ্য প্রবংগ অবৈধ্য হইবেন, এবং বাহার দরাপ্রবৃত্তি, হিতাহিতবিবে
চলাপ্রবৃত্তি, ও হেতুর্তি অধিক ছিনি ওক্তবিটল
ও আল্প্রাহি ব্যবহার দেখিলে অবৈধ্য ইইবেন্দ্র বাঁহার শিরাময়াবস্থা ও রক্তবিশ্বী
প্রবল ইইলে ইন্দ্রিয়া সকল অত্যন্ত ক্রিয়াবান্
হয়, তিনি নর্ম্ম প্রকার ইথোপকথনে ও ক্রিয়া
নির্বাহেই ধীরগতি দেখিলে অবৈধ্যা ইইবেন।

"आनम ७ निज्ञानम्त"। প্রত্যেক ইন্টাইন্তির

श्रीत निग्न প্রাপ্ত হইতে চেন্টা করে এবং প্রাপ্ত

হইলে মনে এক প্রকার সন্তোবের উদ্দিত্য থকা

উপার্জনপ্রতি ধনাতিলাম করে, পার্থাংশপ্রতি
প্রশংসা ও প্রতেদ আকাজন করে, এবং আআদরপ্রতি প্রভুর বা সাধীনতা বাঞ্চা করে। ধনোপার্জন হইলে উপার্জনপ্রতির সন্তোবিইয়, ইহা

দারা এক প্রকার সন্তোবজনক বোধ জনে মাহাকে
আনন্দ বলা বায়। ধনচাত ইইলে উপার্জনপ্রত্

তির সম্পতি হরণ ইয়, এবং পশ্চাই ইইরি ছারা
এক প্রকার সংখ্যায়ক বোধ জন্মে, বাইতিক নিয়া-

नन्त वना यात । এই প্রকার আস্বয়ণঃপ্রবৃত্তি আস্বাদরপ্রবৃত্তি ও শিশুপ্রবৃত্তির দৃষ্টান্ত দেখাইতে পারা यात्र । এক মনোহর সন্তান ভূমিত হইলে পিতা মাতার সন্তান বাসনার ত্যানাধিক্যান্তুসারে স্থধ বোধ হয়, অর্থাৎ তাঁহাদের শিশুপ্রবৃত্তির প্রবশতানুসারে আনন্দের উদয় হয় যদি তাঁহাদের ঐ সন্তান নট হয় তবে ঐ প্রবৃত্তির স্বীয় সম্পত্তি হুতে হইয়া বিদীর্ণ হওয়াতে তাহাদের উক্ত প্রবৃত্তির আতিশ্যান্ত্রসারে শোক বা নিরানন্দ বোধ হইবে।

"শভাব" অর্থাৎ মনের কোন বিশেষ ক্রিয়ার ধারা চালনা দারা প্রবল হইয়া স্বাভাবিক বাঞার কল হইতে উৎপন্ন হয়। ইন্দ্রিয়া উচিত নতে ব্যব্দ্রুত হইয়া স্বাভাবিক ক্রিয়া নির্বাহ করিলে ক্রিয়াবান্ ও অনিক নিপুণ হয়, যেমন বাদ্যহার কের অনুলী সকলবাদ্যানুষ্ঠান দারা মুরা ও নিপুণ গতির হৃদ্ধি করে। কোন ব্যক্তির অনুহৃতি অধিক ধাকিয়া মুখেই অন্ধ্র গণনা করিবার ব্যাননা হইকে অতি শীম্র ভাহাতে নৈপুণ্য হইতে পারে ইহাকে স্বভাব বলা যায়। এবং বিপদভঞ্জনপ্রকৃতি বাদক

ध्वर्डि, ও आधामत्रध्वर्षि अधिक धाकिता विवास ও नर्धारम नर्भमा तक हरेल विद्यापि श्रकात रहा

"गृहम्म' मंखिएकत जेकमांवश्वा हहेएक अवः ইন্তির সকলের মধ্যম ৰূপ ক্রিয়া হইতে উৎপদ হর, বেমন যে পদা অনৌচিত্য, নিয়মাতিক্রম, युक्ति विक्रक्षकी, वा अन्यक्षणका विहीन इरेब्रा कर् চিন্তাই জ্রির ও জ্ঞানেজিয় সকলকে সন্তোগ क्षनाक केदत जाहारक जाकि सुम्बद शहा यहा बाहा। ক্রিছাপজি বা নৌন্দ্র্যাপ্তর্তি অভ্যন্ত অধিক থাকিলে বড় কথা মাবহার করে, হেনুরুত্তি অতি अवन पाकिता अण्यके अक्वांत अत्या कतात्र, लितिहानश्रहि अडांड अधिक धाकिता कण्णना, িরসম্বটিত **হস্ব'কবিছা,** ও **অভ্**নত। করি**তে প্রার্**জ हन्न। अक् थानि हरी विक छानदे कित । अर्थ **अद्श्रि* मक्त**नत मर्शियक्षनक इस खरव हेहारक हैल्य शहरक (याना वना यात्र । अहे तश वर्गवृष्टि नैवन ता इक्रम करण जिल्लाकान इंदर के हरी

^{#18} नाम प्रति कलना।

त्राम् त क्या **जान मन्म शहन्म रहे**द्या, व्यर आकृष्टि वृक्षि की। रहेल कुर्शक्षेत्र त्वाप रहेत्व, त्नोम्बर्धाः প্রবৃত্তি ও বর্ণবৃত্তি যদি অনুমানই ক্রিয়াদি অপেক। व्यक्ति व्यवन हम्न, करत् के ह्वी हमश्कात ও वर्णा-জ্ব বোধ হইতে পারে কিন্তু পৌরব ও ভাব -विदीन दाथ इट्रेंग। मक्द् जि चित अतल इट्रेंल বাক্প্রবহা বাছলা ও বাচালতা হয়, এবং অন্তি की दहेटन वाक् अवक नीतम्, कठिन, उ मीठ १२:७ भारत। घटेनातृष्टि श्रिक अवन १२ तम अबू मान ना कतियारे ज्यान विषय वाक कहत । अञ्च-मानरेखित श्राफ धारत इरेटन यरभर्षे द्राष्ट्रास्थ वा "**श्रमान ना** शाहेशा एकंति जर्क करतन । जीव**श्रहिक** প্রেবল হইলে অধম ও পামর হয়, এবং কোন্ াব্যক্তির চিন্তাইন্দ্রিয় তীক্ষু ও গভীর হুইলেও যদি জ্ঞানেনিয় তদপেকা অধিক প্রবল হয় তবে সে बीतम् ७ जमस्मातक्षम रुट्रेट । 🔑

काम, त्काध, त्नाङ, मन, मार्म्या, अवर त्याह अहे इत्र तिशू कान अक विराम मनःहे जिस हहे ति

३८ পরে मृष्टि कक्रम् ।

মনতত্ব বিদ্যার ব্যবহার্যতা।

এই বিদানে পূর্বে কথিত বীজের মধ্যে উক্ত হইরাছে, যে পরিমাণানুসারে শক্তির সীমা জানা যায়, কিন্তু মন্তিক মনের উৎসাহানুসারে গঠন পরিবর্ত করিতে পারে, তমিমিত্তে প্রথমে প্রায় সমুদায় মন্তিকের পরিমাণ, এমত, কপে ভিয়হ করিয়াজানা উচিত যে সামানা শক্তি প্রফাশ করি-বার যথেই উন্নতি আছে কি না, কারণ যাহার মন্তিক অতান্ত ক্ষুদ্র সেই ব্যক্তি অবশ্রু জনাবধি হত বুদ্ধি হয়।

মস্তকের কোন? স্থানে দানির উন্নতি দেখিতে পাওঁয়া যায়, কিন্ত ইহাতে মন্তিদ্ধের আধিকা বুঝায় না, যেমন কর্নের পশ্চ ভালাস্থিত অন্তি, শিশুপ্রবৃত্তির নিমু ভাগাস্থিত অন্তি, কর্নের সম্মুখের উপরি স্থিত অস্থি, এবং দয়াপ্রবৃত্তি, ভক্তিপ্রবৃত্তি ও দৃঢ়ভাপ্রবৃত্তির মধ্য স্থান দিয়া যে লয়মান অস্থি আছে ভাহাও মন্তিদ্ধের উন্নতি বোধকানহে।

লোকে বলিয়া থাকেন কতক গুলিন ইন্দ্রিয় অভি ক্ষুদ্র পরিমাণে থাকাতে ভাহারা বস্তুতঃ

আছে কি না তাহা ভিন্ন২ করিয়া চিহ্ন কর। অসাধ্য। এই আপত্তি অতিশয় যুক্তি বিরুদ্ধ কারণ দেখুন খোদকারিরা যে সকল অত্যন্ত স্থক্ষ রেখা টানিয়া ছবিতে আলোকের তারতম্য প্রাকাশ করে তাহা ইহারাই নির্ণয় করিতে পারে, এবং মুক্তাককারক দৃষ্টি মাত্রে অতি কুদ্র ছাপার অক-রেরও প্রভেদ করিতে পারে, এই সকলের সহিত তুলনা করিলে অতি ক্ষুদ্র মনতত্ত্বোক্ত ইন্দ্রির বৃহৎ বোধ হয়। তথাচ অতি কুদু ইন্দ্রিয় সকলের স্বীয় ও সম্বন্ধীয় পরিমাণ ভিন্ন> করিয়া টিব্র করা প্রক্র ঠিনবটে, কিন্তু অভ্যাস থাকিলে এই সকলের ও धनगाना रखद शर्रात्व हेन्द्र विस्थित मर्यमाख বোবের তীফুতা দ্বারা জানিতে পারা যায। যেমন कान পाठेगानात वानक वा क्रयक এक श्रुखटकत মধ্যে ভিন্ন প্রকার হস্তাক্ষর দেখিলে তাহার धा अन करिट्ड भारत ना, किंख र्यू निभिकातक দশ বংসর এই কর্ম করিতেছেন তিনি অফেশ্রে ে গ্রন্থের এক শত পত্র এক শত লোকের ঘারা লিখিত হইলেও কাহার কোন্ লিপি ভাষা অবিদয়ে ব্যক্ত করিতে পারেন। আর কোন

উদাসীন ব্যক্তি কোন সংসারের পরিবারের প্রতি অবলোকন করিয়া, তাহাদের সুথত্রী অভ্যন্ত প্রভিন্ন দেখিলে ও পরস্পার পৃথক্ করিতে স্থক্ঠিন वाभ करवन, अग्रंज भक्तंना (मंशिर्ड शांख्या यात्र।

মনতজু বিদ্যা ব্যবহার করিবার কালীন সর্বদা পরণ রাখিতে হইবে,যে যে ব্যক্তির মন্তক পরীক্ষা হইতেছে তাহারপ্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের পরিমাণ অন্য रेक्टियात भतिमानाद्वभारत निर्वातन रहा, अवर्ष কোন বিশেষ মস্তক্ দেখিয়া ভাহার ইন্দ্রিয়ের পরিমাণা**ন্তুসারে অন্য ব্যাক্তর ইন্দ্রিয়ের পরি**-मा , निर्वस करा यास न।।

এইক্ষণে মনতত্ত্ব বিদ্যার সত্যতা প্রমাণ করিব, এवर निकाकात्रक महाभारतता कि कार्प हेन्क्रित সব^{া ি}হীক্ষণ করিবেন তাহাও বলিব। মনতত্ত্ব বিদ্যা প্রমাণ করিবার নিমিত্ত আমরা এক वाक्तित त्वान अक हेक्तिय यमा वाक्तित तमहे रेक्टिएर मिर्ड कथर जूना कति ना, कात्र विके यस्टरक य मकन वित्यवर है लिया चे छास्र व्यक्ति, তাহারা ঐ ব্যক্তির বিশেষ্থ মনের শক্তিকে সর্বা পেকা প্রবল করে, ভনিমিত্তে মনভত্ত বিদ্যা

यमान क्षर प्राप्त नर्सना पक मछत्कत जिन्नर ইন্দ্রিয় পরস্পর তুল্য করি । কিন্তু শিক্ষাকারক-দিগের উচিত, যে তাঁহারা বিভিন্ন মন্তকে এক हे जिस्सात है भतिभारनत जरेनका (मर्थन, जाहा ক্টলে ইহার ভি**ন্ন**২ পরিমাণের ও সংসর্গের ঘাকার কি ৰূপ হয় তাহা স্ভাত হওব। যাই-वक ।

अहे अयुक्त दृहर है किय़ मकन अधरम निर्नाकन कतः याद शक, अवर कान निरमव विषयः निश-রীক স্বভাবযু**ক্ত চু**ঠ বালিয়ে প্রভেদ নির্ছারণ कतिवान कालीन, उँशिषिशदक निकटण वनारेश মস্থান প্রতিক্ষা করা **উচিত্ত, যেমন যে সকল** গজিল : সক্রদারাস, সন্দেহ ও আশস্কাকরে তাঁহাদের নত্রভালেবৃতির **উন্নতি দেখি**য়া গাঁহার। **সর্বা**ন অভি অ্রাক্ষিত এবং প্রায় কোন বিষয়ে ভয় বা সন্দেহ করেন না জিহাদিগের সহিত ঐ ইন্দ্রিয়ের মাকারের তুল্য ক_{ি ।} কিঁয়া যে সকল ব্যক্তিরা ালকের প্রতি অত্যন্ত হে হ করে তাহাদের শিশু-প্রকৃতি দেখিয়া এ দকল ব্যক্তি যাহারা বালকের এতি হেহকরে না, তাহ⊜দিগের সহিত ঐ ইঞি-

য়ের তুলনা করিব। কথন ক্ষুদ্র ইন্দ্রিয় সকল প্রথমে নিরীক্ষণ করিব না, এবং তাহাদের পরস্পর তুলনা না করিয়া পরীক্ষা করিব না।

'लारक नवंना **वर्श्याशिख कतिया थारकन, स्व**ं যে মনুষোর মস্তক রুহৎ তাঁহার "বুদ্দি ভীক্ষু নহে" এবং যাঁহার সন্তক জ্ঞাতিনি "জ্ঞানবান", কিন্তু মনতত্বজ্ঞ মহাশরেরা জ্ঞানেক্রিয়ের পারগতা मभूमात्र मिडिएकत श्रीतिमाटनत महिङ कथन खेका करतन ना, कातुन अहे विमात अक ख्रेशन वीक अहे বে মন্তিফের ভিন্নং স্থান বিভিন্ন গুণ **প্রকাশ করে**, लवः अहे अयुक यगाणि के ममूनात मिकटफ किरन ুজ্ঞা**নেন্তি**র থাকিত তবে মস্তক রুহৎ হইলে े अजावज जिंछ अनेनान मसुषा इंहें 5, वदः यमाप्रि কেবল জীবপ্রবৃত্তি থাকিত তবে 🔌 প্রবৃত্তি অতান্ত ভয়ানক উৎসাহ প্রকাশ করিত। কেরিব্ **জাতির** মস্তিক্ষের পরিমাণ ইউরোপীয় জাতির ন্যায় বোধ হয়, কিন্তু পূর্বেজি ব্যক্তিদিগের কেবল ় জীবপ্রবৃত্তির স্থান বিশেষ উন্নত আছে, এবং ইউরোপীয় জাতির ধর্মপ্রবৃত্তি ও জ্ঞানেনিয়ে সকল তাহাদের অপেক। অভান্ত জ্বেষ্ঠ । কোন

मनण्डळ महामत छेलत कालित मिलिएकत পितमान দেখিয়া ভাছাদের বুজির ও ধার্মিকতার সমভাব কখন বোধ করিবেন না। যথার্থকাপে পরীক্ষা
করিবার জন্য এমত দুই মন্তক গ্রহণ করিব, ধাছারদের কোন পীড়া নাই এবং শরীরাবন্ধা, বর্গক্রন,
প অভ্যান সম্প হইনাতে, আর প্রত্যেকতে সম্শেষ ইন্দ্রিয় সমান সংখ্যাতে আছে, কিন্তু পূর্কোজ্
মন্তক ঘরের মাধাে যদি একটা রহৎ, অন্যটা ক্ষুদ্র
হর, আর তদনুষ্থারে বৃহ্ৎ মন্তকের অধিক কিন্যা
বা ক্ষমতা না পাকে, তবেই মনত্স নিয়া দিখা
দিখা বাব্য করা বাহা বাইতে পারে।

মন্ত্রের মন্তিম পশ্বানিন মন্তিক্ষের সহিত তুলা বরণ কালে, মনত্ত্বজ্ঞ সহাশ্যেরা কেবল উভ-রের যে যে অংশে ঐক্য গোছে তাহা দেখিয়াই নর্নর করেন, এট পশ্বাদির কোন কার্যা দেখিয়া মন্ত্রা আতির মন্তিক্ষের ভিদ্নস্থানের কিয়া সকলের শেকি যুক্তি প্রাপ্ত হইতে পারেন না, ইহার করেণ এই যে ছুই বিভিন্ন জীবের শরীরের গঠন ও ডাইফোবস্থা সকল অভান্ত ভাভুলা হও লাতে ড.হাদিগকে তুলা ক্ষিয়া যথার্থ কল নির্ঘক্তি

করিতে পার। যায় না। জনেক জ্ঞানী বাক্তিরা মন্ডি-क्रटक मरनत रेन्द्रिय जानिया এवः मञ्चरवात मञ्जिक्दक चाडेक, कूकूब, वृष ७ अवष्टाकात जनाना कीरवस মন্তিকাংগ্রুকা রুহুৎ দেখিয়া মনুষ্য মন্তিক্ষের পরি-मान नर्क क्षत्रारत (अर्थ एउ शांद्य में मनुत्यात मनः भक्तर्या । मान त्नात कटान, किला मनजवूक गहा-শরেরা, এই দিক ও মনভত্ব বিদ্যার বীজাতু সারে ন। হওয়াতে বিশান ক্রেন না। কারণ ধাদ কোন পশুর মন্তিত্ব আতি বৃহৎ হয়, এবং ইংগর শারী-রিক বল 🤃 জীবপ্রমৃতির কিয়া প্রকাশ করিবার इनिमरा वका मध्युक गांक, वन यात्र वर १७३ मधिक कृत किछ क्विया कार्रा देवर गढ़ निक প্রকাশ করিবার স্থান সকল অধিন হয়, তবে উত-रसत मरमा अवस्यान्य कीरवह वृक्ति यो महिला नाम হইবে। হতা ও তিমি মাজের মতিছ মনুবা:-্পকা রহৎ, তথালি ইহাদের বুদ্ধি নর হুইতে ্র্রেষ্ঠ নহে, থেহেভু কেছ প্রমাণের ছারা ইহা निर्घ के करतन नार्डे ए रेहारमब्र कारनिट्यात ক্রিণা প্রকাশ করিবার স্থান সকল সমপরিমিত बार्य मग्रुषा इहेरक हुइए, बहे क्षयुक्त नरतता नर्स

जीवारभका ऋषिकः वृक्षिमान् देश नहा जानि-

थरे अकति नानदतत । कृतुदतत मरिक, त्य ও শৃকর ও শৃক্তের মন্তিক হইতে ক্ত, ভগাপি व्यवस्था छ की विज्ञा छा । जिल्ला विष्य विष्य विष्य भारत माम (प्रांभरक भा त्रा यात्र। हे हाटमत्र शकि মনত হ নিদ্ৰ ব্ৰক্তিত করিতে হইলে, প্রথমে টিল নিশ্র জানিতে হইলেক, যে জীব সকলের মন্দ্রিক্তের গঠন শ্বভাব, ও অবস্থা যথোচিত মতে भन्न इरेटल कार्शिनरक भन्नभन हुन। कना বাহাতে পালে কিন্তু এইৰূপ কথন ঘটিতে পারে হা । ছাংপরে । না উচিত যে প্রত্যেক **জাতি**র স্থান স্^ট্ৰের সো**নেন্দ্রিয় ক্রিয়াবান্ হয়,এবং অব**-পের প্রক্রের নিয়ন প্রকাশ করিবার **ক্ষমতাকে** ভারতের কিটালত ইন্দিরের পরি**মাণের সহিত** ুল্য করিতে। ব্রে। যদিন্তাৎ মন্তিন্ধের পরি-माराजुरा 🕟 🤝 स्नामाधिक मा इर्डाठ, उटत रह 🕟 বীভিয় কথা ৰ াণ হইছেছে তাহা ঐ জাতিতে ावर्षकार महोरात किन्नु **हेशा छाता अगल जिंद कता**

আমাদিগের হিন্দু লাতীয় হারা এই প্রকার

দ্রব্য সকল আন্তন করিয়া জাত হওয়া স্থকটিন,
তিরিমিত যাহা কহিলান বিশাস করিবেন, কারণ
মুক্ত জাতীরেরা অনেক দৃষ্টান্ত দেখিয়া ইছা
সপ্রমাণ করিয়াছেন।

পা ঠকমহাশয়দিগের পুতি নিবেদন।

হে মহাশয়গণ আপনারা সানুগ্রহ চিত্তে এই
পুত্তক পাঠ পুর্বেক, ইহার গুণ দোষ বিবেচনা
করিয়া আমার অসীম পরিশ্রম সকল করিবেন। এই
বিদ্যা সত্য কি মিখ্যা ভাষা মনুষা জাতির মস্তক
পরীক্ষা করিলেই অবগত হইতে পারিবেন,
এবং এই পুস্তক পাঠ করিয়া ইহার ভাবার্থ অবগত হইয়া তৎপরে এই পুস্তকে লিখিত প্রণালী
অনুসারে মৃত্তক পরীক্ষা করিবেন। এবিষয়ে
আনার অধিক বাকা বায়করা র্থা।

অনেকে কহিয়া থাকেন ইহা নিথ্যা, কিন্তু চুংথের বিষয় এই যে ভাঁহারা এই বিদ্যার কিঞ্চি-মাত্রও না জানিয়া এমত উক্তি করেন; অত্তর্ব আমি আকাজ্জা করি বিজ্ঞবর পাঠক মহাল-ঘেরা তদ্ধেণ না করিয়া, অগ্রে পূর্ব্বাক্ত প্রশালী অনুসারে এই পুস্তকের মর্ঘ বোধ করিয়া পশ্চাৎ নত্য মিথ্যা বিবেচনা করিবেদ।

কোন প্রকার ত্তন বিষয় প্রকাশ হইলে, শবিজ্ঞ লোকেরা নানা প্রকার বিজ্ঞপাদি দারা তাহা নক্ট করিতে যথোচিত চেক্টা করে, কিন্তু তাহাদের তুর্তিপ্রায় উল্লেজ্জন করিয়া দেশহিতৈথি বিজ্ঞান মহাশান্তি করা উল্লেজ্জন করিয়া দেশহিতৈথি বিজ্ঞান মহাশান্তি করা উচিত, এবং যে মূর্তন বিষয় বিবিধ লোকের বিবিধ প্রকার প্রতিবন্ধকতায় উত্তীর্ণ হইয়া ক্রমণা দেশ বিদেশে প্রচলিত ও আদরণীয় হইতে গাকে, তাহাকে অবশুই স্তাবলিয়া গণ্য কবিতে হয়।

यश्कात्न छाङ्ग नेन् माह्य क्षथ्य धरे विमा क्षणातिक कांत्रमा अनवतक हेन्द्र कानना कतिरक नाभित्नन, कश्कात्म कत्मित्र महाद्राका छै। शह धरे सूकन विषय क्षणायतक अवताम भागना किन्द्रम कांहात्क कांत्रभाति क्षक्र करतन, आंत्र आश्रीय वक्षनर्भताञ्च कांहात्म अतिकार्य कतिरनन, धर्म भश्चाम अर्ज्ज कांहात्म अतिकार्य कतिरनन, धर्म भश्चाम अर्ज्ज कांहात्म अतिकार्य कतिरनन, धर्म धरे नत्माश्या विद्यात हाम कत्म र रिक्त क्ष्रे-याहित्नन, विष्ठ अतिरम्य मकत्मित्र क्ष्रे-याहित्नन, विष्ठ अतिरम्य मकत्मित्र क्ष्रे-याहित्नन, विष्ठ अतिरम्य मकत्मित्र क्ष्रे-धर्मिक्षक्रका विक्रम हरेन, कांत्रम धरे मनक्ष्र विद्या आर्थन छर्न क्ष्रमा उठिन, धरे क्ष्रमिक्ष क्ष्रमा अर्थन দেশে সমাদরণীয় হইয়া আসিতেছে, বোধ হয় আমাদিগের দেশেও শীঘ্র সকলের আনন্দ রুজি করিবেক সন্দেহ নাই। ুহে পাঠক মহাশয়গণ বিবেচনা করুন মিখা বিষয় কি এতকাল পর্যান্ত প্রবল থাকিতে পারে।

এই मर्ट्श भकाति शै विमा अरात इहेवात शृट्स কোন দেশের ব্যক্তিরা মনের বিষয় কিছু মাত্র कानिक ना, किस अकरन अहे विमात कारलाहना ছারা অনেকে অনেক মানসিক ব্যাপার অবগত कडेबादकृत। देका जालाभि कतिया बना कि श्रमार्थ, ও তাহারা কি ৰূপ শক্তি, তদ্বারা ব্যক্তি সকল কি কি কর্ম করিতে সমর্থ হয়, এবং মনের শক্তি 'घनु नादत कि क्रान क्षाय छ। छे ९ भन्न रहेग्रा थाटक, **७ कि उपाराई** द माय निवातन अवर छन वृक्ति इंट्रेंट्ड शाहर केंद्रां नि मगर विषय वित्मय करिय মনুর্বারা জানিতে সমর্থ হয়, স্বতরাং মনতত্ব বিদ্যা বাঁহার মনে অধিষ্ঠিতা হয় তাঁহাকে ধর্ম পথের পথিক করে এবং সর্ব্বদা ধৈর্য্য গুণ ও পর-স্পর সহতা শক্তি প্রদান করে। এই বিল্যা শিথি-ल ममुनार लाद्यत पाखित्क वार्भात ७ हेन्ध्र

এবং স্বভাব নিশ্চন রূপে অনুমান করা যায়, তাহা रहेरन माधि याक्तित माध मिया जारात श्रक्ति ক্রোধ উৎপদ্ধ হয় না বরং দয়াই জন্মতে পারে। अञापुण कल कम ह विना, भिका कहा छ एम्भ বিদেশে ইহার গণ প্রচার করা মন্তব্য মাতেরি অবশ্র কর্ত্তব্য কিম্পিক্মিডি!